

संजय की कलम से ..

## संतुष्ट जीवन

आत्मा का मूल गुण है ही पवित्रता, प्रेम और शान्ति। जब तक आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित है और उसे इस बात की चेतना है कि मैं आत्मा इस शरीर में विराजमान होकर शरीर के अंगों द्वारा कार्य करा रही हूँ, तब तक उसके साथ असंतुष्टता जैसी कोई बात हो ही नहीं सकती। ज्ञान, आनन्द, प्रेम और शान्ति ही तो आत्म-तुष्टि के मूल हैं।

बाहरी व्यक्ति और वस्तु हमारी इसी अवस्था को बिगाड़ने का यत्न करते रहते हैं। इन वस्तुओं के बाहरी रूप हमें काम, क्रोध, लोभ और अहंकार आदि विकारों की तरफ घसीटते हैं। सजग न रहने के कारण हम आत्म-विस्मृति में आकर, निज स्वरूप को भूलकर इन विकारों को ही अपना स्वभाव बना लेते हैं अथवा पुण्यात्मा से पापात्मा बन जाते हैं। विषय-वासनाओं में अथवा इंद्रिय-भोगों में लिप्त हो जाते हैं जिनसे हमें एक क्षण के लिए सुख और संतोष तो प्राप्त होता है परंतु दूसरे ही क्षण हम फिर दुखी और अशान्त दिखाई देते हैं। आँख-मिचौली का खेल चलता ही रहता है। शरीरधारी स्नेही का मिलन एक क्षण के लिए सुख प्रदान करता है परंतु शरीर नश्वर होने के कारण मिलन के सुख में वियोग का दुख भी निहित है। यह बात संसार के

सभी संबंधों के विषय में लागू होती है। जब तक हम अपनी आत्म-स्थिति में स्थित होकर इन बदलते स्वरूपों और संबंधों को साक्षी-द्रष्टा के रूप में नहीं देखेंगे तब तक हमें स्थायी संतुष्टि प्राप्त नहीं हो सकती।

अपनी संतुष्टता के लिए हम बाहरी चीजों को आधार न बनायें। उन पर निर्भर न रहें। बाहरी वस्तुओं और व्यक्तियों के बदलते स्वरूपों का हमें दास नहीं बनना है बल्कि अपने को इनका मालिक समझना है। अतः चलचित्र के समान उभरते रंग-बिरंगे चित्रों को, बदलते दृश्यों को और चलती-फिरती पुतलियों को देखते हुए भी अपने मालिकपने की हैसियत को न भूलें। यदि इनके बदलते मूल्य और अपने स्थायी स्वरूप का अंतर, दृष्टि से ओझल न हो तो हम हर परिस्थिति में संतुष्ट रह सकते हैं।

स्थायी स्वरूप का ध्यान रहेगा तो परिवर्तनीय दृश्य हमें तंग नहीं करेंगे। जैसे दिन-रात और ऋतुएँ बदलती हैं तो हम इसे प्राकृतिक नियम समझ स्वीकार करते हैं, विचलित या उद्विग्न नहीं होते। इसी प्रकार, वस्तुओं और व्यक्तियों के बदलते स्वरूप, उनका व्यवहार, उनसे प्राप्ति और अप्राप्ति हमें विचलित नहीं करेगी। ❖

### अमृत-सूची

◆ मनमनाभव (सम्पादकीय).....	4
◆ महाभारत युद्ध..(कविता).....	5
◆ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के..	6
◆ 'पत्र' संपादक के नाम.....	8
◆ पुरुषोत्तम संगमयुग एवं .....	9
◆ धीमा जहर तम्बाकू .....	12
◆ व्यर्थ से बचिए .....	14
◆ ईश्वर मर्जी और मनमर्जी .....	15
◆ जादू नहीं, सत्यता की शक्ति.	16
◆ सहनशीलता.....	17
◆ परिस्थितियाँ हैं खाद.....	18
◆ विज्ञान का सहयोग.....	19
◆ भाग्य बनाना सीखो (कविता).	20
◆ जेल में मिला नया जीवन.....	21
◆ पारसमणि .....	22
◆ बाबा ने ली सुध .....	23
◆ अथाह ज्ञान-भण्डार थे.....	24
◆ एक माँ के दर्द में प्रभु .....	27
◆ संपूर्णता देती है आत्म- संतोष	29
◆ सचित्र सेवा समाचार.....	30
◆ ज्ञानामृत महोत्सव .....	32
◆ सचित्र सेवा समाचार.....	34

### सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	80 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	80/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	750 /-	8,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	750/-	8,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

- शुल्क के लिए सम्पर्क करें -  
09414006904, 09414154383

## मनमनाभव

मनुष्य के अस्तित्व में दो विरोधी शक्तियों का मेल है। एक है आध्यात्मिक सत्ता – आत्मा और दूसरी है भौतिक सत्ता – शरीर। शरीर पाँच तत्वों से बनता है और इसकी पालना भी पाँच तत्वों से ही होती है। स्थूल शरीर की भी बहुत-सी क्रियायें ऐसी हैं जिन्हें देखा नहीं जा सकता, महसूस किया जा सकता है। जैसे, शरीर के ठीक-ठाक होने या जीवित होने की पहचान के लिए नब्ज देखी जाती है। वास्तव में, नब्ज दिखती नहीं है, इसकी गति को हाथ लगाकर अनुभव किया जा सकता है। यह अनुभव भी तभी हो पाता है जब व्यक्ति भी शांत हो और वातावरण भी शांत हो। तो देखिये, एक स्थूल क्रिया की जांच भी शान्ति मांगती है तो सूक्ष्म शक्ति आत्मा की जांच या अनुभूति के लिए कितनी शान्ति चाहिए!

### अलग-अलग हैं

#### मन और दिल

नब्ज का सीधा संबंध हमारे हृदय की धड़कन से है। हृदय अनवरत गति से दिन-रात कार्य करता है, एक दिन भी आराम नहीं करता। इसी प्रकार, सूक्ष्म आत्मा की एक शक्ति – मन भी निरंतर संकल्परत

है। आत्मा के शरीर में होने का प्रमाण है उसका संकल्प करना। इसलिए कहा गया है, I think therefore I am अर्थात् मैं हूँ, इसका प्रमाण है कि मैं सोचता हूँ। शरीर का अंग – हृदय (Heart) और आत्मा की शक्ति – मन – ये दोनों निरंतर कार्यशील हैं। इसलिए लोगों ने दोनों को मिला दिया है। वे मन और दिल को एक ही मानते हैं पर दोनों हैं अलग-अलग।

#### दर्द है मन में

कई बार व्यक्ति के मुख से निकलता है कि आज दिल में बहुत दर्द है या मेरा दिल टूट गया है या दिल को चोट लगी है। उस व्यक्ति को डॉक्टर देखता है, जाँच करता है और कहता है, दिल तो ठीक-ठाक है, न चोट लगी है, न टूटा है, न दर्द के कोई लक्षण हैं। व्यक्ति कहता है, इतना दर्द है कि मैं सारी रात सोया नहीं, अभी भी चैन नहीं है पर डॉक्टर कहता है, शरीर में कोई कमी-कमजोरी नहीं है। प्रश्न उठता है, यह दर्द कहाँ है? यह दर्द दिल (Heart) में नहीं है, मन में है। मन की आशा के विपरीत घटना घटी है, उसके मंसूबे अपूर्ण रह गये हैं परंतु मन और दिल को एक समझ लेने के

कारण हम इसे दिल का टूटना कह देते हैं।

#### दिलवाला है भगवान

भगवान को दिलाराम कहते हैं, दिलवाला भी कहते हैं परंतु उनको शरीर नहीं तो दिल कहाँ से आया। यहाँ भी दिल का अर्थ है भावना। भगवान भक्तों की भावना को समझने वाला, उन्हें पूर्ण करने वाला और सर्व की पावन भावनाओं को अपने में समा लेने वाला है। उसकी इस विशालता को, उच्चता को दिल नाम देकर उन्हें दिलवाला कह दिया गया है।

#### खोजी स्वयं को खोजता है

दिल (हृदय) के धड़कने का अनुभव तो स्पर्श से या यंत्रों से भी हो जाता है परंतु मन का और मन के विचारों का अनुभव गहन अंतर्मुखता की स्थिति में ही हो पाता है। मन आत्मा की एक शक्ति है। आत्मा का निवास भ्रुकुटि रूपी गुफा के अंदर है। वहाँ यह एक छोटे-से प्रकाशकण के रूप में विद्यमान है। गुफा के अंदर छिपी आत्मा को अंदर जाकर ही मिलना होता है। चूँकि यह मिलन भ्रुकुटि रूपी गुफा के अंदर होता है इसलिए इसमें बाह्य जगत का दिखना बंद हो जाता है। इसी को अंतर्मुखता की गुफा कहा जाता है।

इस गुफा में खोजी और जिसे खोजा जा रहा है, दो नहीं, एक ही हैं। खोजी, स्वयं को खोज रहा है। खोजी जब इस गुफा में उतरता है तो स्वयं के ही स्वरूप का साक्षात्कार करता है। इस साक्षात्कार से वह भरपूर हो जाता है, आनन्दित हो जाता है, आत्मविश्वास से भर जाता है, न्यारा और सबका प्यारा हो जाता है, साक्षी और आत्मद्रष्टा हो जाता है, एकांतप्रिय और समर्थ हो जाता है। उसमें हल्कापन और निश्चिन्तता आ जाती है, परचिंतन समाप्त हो आत्मदर्शन और आत्मचिंतन होने लगता है।

### मन मेरे में लगाओ

हृदय को बाह्य दृष्टि देख सकती है। डॉक्टर लोग हृदय को शरीर से बाहर निकालकर भी रख लेते हैं। उसके स्थान पर बंदर का हृदय भी लगा देते हैं अर्थात् हृदय का प्रत्यारोपण हो सकता है पर मन का प्रत्यारोपण नहीं होता। आत्मा के देह त्यागने पर उसकी शक्ति मन भी उसके साथ ही चली जाती है। भगवान ने कहा है, मन मेरे में लगाओ। मनमनाभव कहा गया है, दिलदिलाभव नहीं। मन ही भगवान तक पहुँच सकता है, हृदय शरीर से अलग होकर परमधाम तक पहुँच नहीं सकता। भगवान की मीठी-प्यारी याद को भी मन ही अपने में समा सकता है।

भ्रमर को जब तक रसीला फूल ना मिले, वह बगीचे में एक फूल से दूसरे पर, दूसरे से तीसरे पर भटकता है, मंडराता है पर ज्योंही रसीला फूल मिल जाता है, उसकी आवाज और भटकती हुई उड़ान को ठहराव लग जाता है, फिर वह रसानन्द में डूब जाता है। मनुष्य के भटकते मन रूपी भ्रमर को भी सच्ची शान्ति, परमानन्द और एकाग्रता तभी मिलती है जब परमात्मा रूपी परम रसीले फूल की उसको पहचान मिलती है, उससे उसके मन का मिलन होता है। ऐसा भाग्यशाली मन अपनी सारी थकान, निराशा, हताशा भूलकर मनमनाभव हो जाता है। भ्रुकुटि की कुटिया में बैठकर वह संसार की ओर खुलने वाली खिड़की को बंद कर लेता है और परमात्मा पिता की ओर खुलने वाली खिड़की से, निरंतर उस ज्योतिर्मय को निहारने लगता है। उसकी निराशा भरी 'भिन-भिन' की आवाज़ समाप्त हो अब 'पाना था सो पा लिया' यह आवाज़ मन में अनहद नाद की तरह गूँजने लगती है। प्रभु का प्रेम-निर्झर उस पर बरसने लगता है और ईश्वरीय वरदान उसे मिलने लगते हैं। उसका जीवन धन्य-धन्य हो जाता है और वह भगवान से शिकायत करने के बजाय उसका शुक्रिया करने लगता है।

— ब्र.कु. आत्म प्रकाश

### महाभारत युद्ध फिर ठन रहा

ब्रह्माकुमार सुधीर,  
पुरसौलिया, मधुबनी

कौरव आपस में लड़ रहे हैं  
दुकड़ों के लिए मर रहे हैं  
क्रोध की ज्वाला से दहक रहे हैं  
कामांध होकर अकड़ रहे हैं

नारी पर पड़े दुष्टों के नयन  
द्रौपदियों के करते चीर हरण

हाय! ये लोग  
विकारों में हैं मगन  
कितना हो गया है  
चारित्रिक पतन

कौन उस विज्ञान गर्वित को  
रोके आज

वह बम बनाने से न आता बाज  
हथियारों को बनाया उसने साज  
अपराध की फैला रहा  
चहुँ ओर आवाज

हो गई है महाविनाश की तैयारी

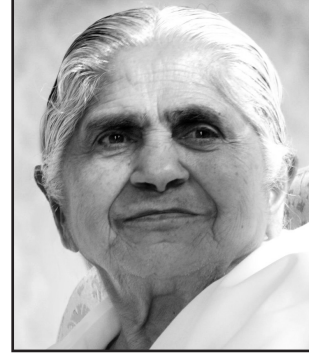
ब्रह्मास्त्र रूपी बम  
चलाने की बारी  
जागो, अज्ञान नींद से  
पांडव सदाचारी  
पवित्र बन घर चलने की  
करो तैयारी

हिंसा का नगारा बज रहा है  
संसार बमों से सज रहा है  
मानव मूसल चलाने को  
मचल रहा है

महाभारत युद्ध फिर ठन रहा है

## प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुथियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... — सम्पादक



**प्रश्न:-** वृत्ति क्या चीज़ है, वृत्ति का क्या प्रभाव पड़ता है? प्रवृत्ति में पर-वृत्ति कैसे रहे?

**उत्तर:-** मेरी प्रवृत्ति बहुत बड़ी है, ऐसा सोचेंगे तो फंसे रहेंगे। भले लौकिक में रहते हैं या यहाँ रहते हैं तो भी कई प्रकार की प्रवृत्ति में फंसे रहते हैं। प्रवृत्ति माना लौकिक कारोबार, पर-वृत्ति माना त्याग वृत्ति, वैराग्य वृत्ति। मन में जो संकल्प बार-बार चलते हैं उसकी वृत्ति बनती है। जैसी दृष्टि होती है वैसी वृत्ति बन जाती है। वृत्ति में सूक्ष्म अहंकार भी है, लोभ भी है तो मोह भी है। वृत्ति में कोई बात आ गई तो गुस्सा भी है। तो वृत्ति से दृष्टि ऐसी बनती है और दृष्टि से वृत्ति बनती है। फिर उसका संबंध है स्मृति से। मैं आत्मा हूँ, सब बाबा के बच्चे हैं, इस शुभचिन्तन में रहने से शुभचिन्तक बनते हैं। शुभचिन्तक में अहम् भाव, वहम भाव नहीं होगा, दोनों ही नुकसानकारक हैं। मेरा भाव या स्वभाव श्रेष्ठ है, कल्याण का है तो वृत्ति भी श्रेष्ठ, दृष्टि भी श्रेष्ठ बन जाती

है। परन्तु स्मृति श्रेष्ठ तब बनती है जब पुरानी स्मृति भूल जाती है। अभी इस संगमयुग पर जो पुरानी स्मृति भरी है, उसे मिटा करके नयी स्मृति भर लो। किसी का स्वभाव, संस्कार वृत्ति में आ गया है। तो पुरुषार्थ में वृत्ति को चेक करो कि वैराग्य है? कोई खींच तो नहीं होती है? मन शान्त है तो बुद्धि अच्छा सोचती है। त्याग है तो कहीं आंख नहीं डूबती है। भगवान ने जो दिया है उसे अपना समझना, यह भी अमानत में ख्यात है। तो वैराग्य से त्याग, फिर अनासक्त, विदेही और ट्रस्टी। वृत्ति से दृष्टि और दृष्टि से वृत्ति बनती है। गीता में भगवान कहता है मेरे को जानने के लिए, देखने के लिए दिव्य दृष्टि और दिव्य बुद्धि चाहिए। तो दिव्य दृष्टि और दिव्य बुद्धि के लिए पहले दिव्य वृत्ति चाहिए। भगवान का बनने से दिव्य दृष्टि और दिव्य बुद्धि बन जाती है।

**प्रश्न:-** बाबा ने मम्मा और भाऊ को अपने से पहले क्यों बुलाया? मम्मा को जल्दी बुलाने का राज क्या है?

**उत्तर:-** जब हम छोटे थे तो मम्मा ने माता रूप से हम सबकी पालना की। परन्तु मम्मा ने सदा अपनी स्थिति ऊंची रखने का ध्यान रखा। यज्ञ माता होते हुए भी कोई भी प्रकार का टेन्शन नहीं था। सभी को मातृ स्नेह दिया। ऐसा मातृ स्नेह देकर सबको मज़बूत बना दिया। मम्मा हमारे आगे मिसाल थी कि स्थिति कैसी हो। जब मम्मा ने शरीर छोड़ा, उस दिन से लेकर बाबा ने मात-पिता का पार्ट बजाया। बाबा को पूछा माँ कहां चली गई बताओ ना? तो कहा देखकरके क्या करेंगी? उससे मिलने जायेंगी क्या? वो अपना पार्ट बजा रही है, सारे विश्व की आत्माओं की पालना कर रही है। बाकी वह बाबा से पहले क्यों गई, क्यों क्या का तो प्रश्न ही नहीं है। हर एक का अपना-अपना विशेष पार्ट है, नई दुनिया की स्थापना में किसी न किसी रूप से विशेष आत्माओं को बाबा निमित्त बनाता है। सारे विश्व की सेवा का, यज्ञ सेवा का आधार भाऊ पर था। सेवा करते हुए पढ़ाई और योग से प्यार था। एकाउन्ट और यज्ञ का हर कारोबार इतना अच्छा

सम्भालता था, बाबा को निश्चिन्त करके रखा था। उसकी परखने की, देखने की शक्ति बहुत तेज़ थी। तो गुप्त रूप में, झाड़ की जड़ें बहुत मज़बूत हैं। जिनका जो पार्ट है, वही चल रहा है, प्रश्न करने की ज़रूरत नहीं है।

**प्रश्न:- साकार बाबा ने कहा था - सतयुग में गद्दी पर बैठने वाले यहाँ भी नम्बरवार बैठेंगे, तो अभी बाकी कौन-कौन हैं?**

**उत्तर:-** बाबा सतयुग की थोड़ी बात सुना करके कहता था मनमनाभव। इन बातों के विस्तार में नहीं जाओ। अपनी शकल देखो कि नारायण जैसी है? अभी तक केवल बाबा मम्मा दो ही फिक्स हैं। पर मैं कहती हूँ विश्वकिशोर बाबा का बच्चा फिक्स है। ऐसा सुपात्र बेटा, अभी तक यज्ञ में कोई और है नहीं जो गद्दी पर बैठने लायक हो। बाकी कौन-कौन गद्दी पर बैठेगा, यह बाबा ने नहीं बताया है। पहले हम ऐसी चिटचैट करते थे। अगर कभी कोई उदास हो जाता था, तो बाबा कहता था कि यह दासी बनेगी। फिर बाबा ने यह सब बन्द करा दिया।

**प्रश्न:- वेहद विहंग मार्ग की सेवा में मम्मा का पार्ट क्यों नहीं है?**

**उत्तर:-** पार्ट है ना! बाबा ने कहा था मम्मा जहाँ जन्म लेंगी वहाँ उनसे बहुत सेवायें होंगी। बाकी वो कहाँ है, क्या

सेवा कर रही है, इसके लिए बाबा कहता वह गुड़ जाने गुड़ की गोथरी जाने। बाकी संगमयुग का समय थोड़ा है इसमें हम पुरुषार्थ करके सम्पन्न बनें। अगर आज भी विनाश आ जाये तो! तो बाबा कहता है एवररेडी रहो।

**प्रश्न:- बाबा को कौन-से बच्चे अच्छे लगते हैं?**

**उत्तर:-** बाबा को ऐसे बच्चे अच्छे लगते हैं जिनको बाबा अच्छा लगता है, बाबा को वो अच्छे लगते हैं। बीच में किसी कारण से भी बाबा को पीठ न करें, बड़ा नुकसान है। उसके डायरेक्शन को अमल न करे, श्रीमत को माथे पर न रखे – बड़ा नुकसान है। बाबा ने जो मर्यादायें बताई हैं, उस पर चलने से बड़ी शक्ति मिलती है। अमृतवेले से रात्रि तक नियम बनाकर दिया है। तुम्हीं से खाऊँ, तुम्हीं से सुनुँ..बाबा को सब पता है, क्या बताऊँ, बाबा इशारा करेगा, तुम सोचो मत, हो जायेगा। तन से हो, धन से हो, संबंध से हो – करा देता है। मेरे को थोड़े ही करना है। इसमें भाऊ विश्व किशोर नंबरवन था। कभी नहीं कहा मैंने किया, बाबा ने कराया। तुम्हीं संग रहूँ, तुम्हीं संग खाऊँ इसका सुख बहुत है, कोई क्वेश्चन नहीं। थोड़ा याद की गहराई में जायेंगे तो न कोई मित्र, न कोई संबंधी। इतना प्यार करेगा कौन!

संगमयुग पर परमात्मा का जिसने प्यार पाया है वो सारे कल्प में बहुत काम आया है। सारे कल्प में किसी मनुष्यात्मा के प्यार की इच्छा नहीं होगी। ऐसा अनुभव करो तो आपके अनुभव की शक्ति औरों को मिले।

अरे कान खोलकर भगवान की बातें सुनना, दिल में समाना और जीवन-यात्रा का एक-एक मिनट सफल करना – भगवान इसमें खुश है। समय को सफल करो जिससे आपको देख और भी सीख जायें। बाबा ने सेवा करने के लिए सारी विश्व हाथ में दी है, हर एक को परमात्मा से मिले हुए खज़ाने दिलाने में साथी बनो। सच्ची दिल से, वृत्ति से, दृष्टि से साथी बनो। अभी समय है सफल करने और कराने का। भगवान जिसमें खुश है मुझे वो ही करने का है। वो हमारे कारण ही सृष्टि पर आता है, हमको ऊँचा पावन बनाने के लिए। ऐसे बाबा को क्यों ना याद करें! खुशी में प्यार करते हैं। कहाँ से खुशी नहीं मिलेगी तो प्यार करेंगे क्या? कुछ मिला तो कहेंगे ना आओ-आओ। सब मनुष्य झूठ से थके हुए हैं, अभी हम और कुछ न करें, सिर्फ सच्चे बनें, बस। तो भगवान के काम के बन जायेंगे। यह धुन लगी रहनी चाहिए – सच्चा बनना है, सच्चा बनेंगे तो साथी भी सच्चे बन जायेंगे। ❖





## ‘पत्र’ संपादक के नाम

सितंबर 2010 अंक का संपादकीय ‘यंत्रवत् और मानववत्’ बहुत ही अच्छा लगा। इसमें देह के भान से, कर्मेन्द्रियों की गुलामी से बचने एवं शरीर के मालिक बनकर, मन को कंट्रोल कर, आत्मस्थिति में रहने का बहुत अच्छा प्रेरणादायी उपाय बताया गया है। घोड़े का उदाहरण देकर बताया गया है कि विनाशी और नकली शरीर से ममत्व निकाल, आत्मा सच्ची कमाई करे एवं सतयुगी दुनिया में जाने का भाग्य बनाये। ‘दोस्त हो तो ऐसा – खुदा दोस्त जैसा’ लेख भी प्रेरणादायी लगा।

— ब्र.कु. गजानंद रजक, देवरी

अक्टूबर 2010 अंक के संपादकीय के लिए –

परिस्थितियों में भी प्रगति करना सिखाया आपने।  
अच्छों को बुरा साबित करना दुनिया की पुरानी आदत है,  
ऐसी आदत वालों के साथ रहना सिखाया आपने।  
अच्छी परिस्थिति में तो प्रगति हर कोई करे मगर  
विषम परिस्थिति में रहकर भी प्रगति करना सिखाया आपने।

ऐसे प्रशंसनीय संपादकीय के लिए बहुत-बहुत अभिनंदन!

— ब्र.कु. किशोर मेहता, धोराजी

ज्ञानामृत ज्ञान, अनुभव और रचनात्मकता का अनुपम भण्डार है। इसको पढ़ने से दिल हर्षाता है और प्रेरणा मिलती है। इसके प्रकाशन में सहयोग देने वाले भाई-बहनें वाकई प्रशंसा और बधाई के पात्र हैं।

— ब्र.कु. मनीष, जोधपुर

सितंबर 2010 अंक पढ़कर बड़ी खुशी हुई। इसका एक-एक विषय महत्वपूर्ण लगा – ‘दादी जी के जवाब’, ‘दोस्त हो तो खुदा दोस्त जैसा’, ‘सम्पादकीय’, ‘दैवी संविधान’, ‘भगवान पुत्र रूप में’ आदि। ‘राजयोग द्वारा वृत्ति परिवर्तन’ समय के अनुरूप बिल्कुल सटीक लगा। सबसे मुख्य है वृत्ति को बदलना। आजकल शिक्षा तो जगह-जगह मिल रही है लेकिन वह तो केवल आजीविका के लिए है। वृत्ति बदलने से हमारा लोक-परलोक बदल सकता है।

‘महिला सशक्तिकरण’ लेख में, ‘अंततः महिला एक शरीर नहीं,

आत्मा है’, ये शब्द सचमुच दिल को छू गये। ‘संगठन की मजबूती’ लेख भी अच्छा लगा। पूरी पत्रिका के हर एक शब्द में ऐसा जादू है, करिश्मा है जो किसी भी चिंतनशील आत्मा के जीवन में एक नई रोशनी प्रदान कर सकता है।

— ब्र.कु. रामलखन, रायपुर

दिसंबर 2010 के अंक में ‘दयनीय कौन?’ लेख में आम लोगों का भ्रम दूर करने के लिए बड़े मार्मिक व सुरुचिपूर्ण ढंग से अच्छा वर्णन प्रस्तुत किया गया है। आज यदि कन्याओं में पूर्व संस्कारवश शुरू से ही किसी भी रूप में परमात्मा के प्रति लगन एवं रुचि पैदा होती है तो इससे बड़ी सौभाग्य की बात क्या हो सकती है। इसमें गरीब-अमीर की दीवार खड़ी होने का प्रश्न नहीं उठता है। आज भी अनेक कन्यायें, शिवबाबा की असीम कृपा से, आध्यात्मिक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त कर, निःस्वार्थ भाव से जन-जन के जीवन और विश्व के कल्याण हेतु अपने को समर्पित कर सतत् प्रचार-प्रसार में सेवारत हैं। इससे यह आम धारणा स्वतः ही गलत सिद्ध हो जाती है कि गरीबों की कन्याओं को ही ब्रह्माकुमारी बनाया जाता है। लेखिका को साधुवाद तथा शुभकामनायें!

— ब्र.कु. हेमराज, अजमेर

# पुरुषोत्तम संगमयुग एवं भविष्य का राज्य कारोबार

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

परमप्रिय परमात्मा शिव बाबा ने हम बच्चों को आने वाली दुनिया का साक्षात्कार भी कराया है और हमें इसके लायक बनने की प्रेरणाएँ भी दी हैं। जैसेकि शिवबाबा ने बताया है कि सतयुगी राजधानी की स्थापना हो रही है और राजधानी में सबकी जरूरत होती है। उस हिसाब से सब प्रकार के भाई-बहनें, राजा, रॉयल परिवार, साहूकार, सामान्य प्रजा सबकी जरूरत सतयुग में पड़ेगी और सबका आपसी व्यवहार इतना कुशल होगा कि वहाँ अटल, अखण्ड, निर्विघ्न राज्य-कारोबार होगा।

अगर निर्विघ्न राज्य-कारोबार चलाना हो तो इसकी ट्रेनिंग भी लेनी पड़ेगी और इसलिए वर्तमान समय में यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय भविष्य की राज्य व्यवस्था के लिए निमित्त आत्माओं को ट्रेनिंग देने वाला विश्व विद्यालय है। जैसे शिवबाबा सारे विश्व के इतिहास को दो शब्दों में कहते, कल, आज और कल। इसके बारे में एक बहुत ही अच्छा अनुभव है।

आबू में ज्यूरिस्ट विंग की कांफ्रेंस थी और राजस्थान के गवर्नर ने उसका उद्घाटन किया था। दूसरे

दिन उन्होंने सभी ज्यूरिस्ट को राजभवन में चाय-नाश्ते के लिए बुलाया तो सभी डेलीगेट्स राजभवन पहुँचे। वहाँ पर एक वकील ने बहुत अच्छी बात कही कि कल हम राजयोग भवन में थे, आज राजभवन में हैं तो राजयोग के योग शब्द से ही राजयोग भवन राजभवन में परिवर्तित हो गया है अर्थात् कल का राजयोग भवन आज राजभवन में बदल गया है। आज के ब्राह्मण भाई-बहनें भविष्य के होवनहार देवी-देवता बनने वाले हैं तो उन्हें सब प्रकार की ट्रेनिंग इस विश्व विद्यालय द्वारा दी जाती है।

दुनिया में कई जगह पर वर्तमान मुखिया के शरीर छोड़ने पर उसका स्थान ग्रहण करने के लिए काफी संघर्ष होता है, अनेक प्रकार की समस्याएँ होती हैं। आजकल अखबारों में यह बात आती है कि भारत में एक संस्था के प्रमुख संत गहन बीमारी से पीड़ित हैं तो उस संस्था में उनकी जगह कौन मुखिया बने, इस पर वहाँ के ट्रस्टियों तथा उस संत के भतीजे के मध्य विवाद चल रहा है। उस संत का भतीजा कहता है कि मेरे चाचा की संपत्ति का मैं ही वारिस हूँ जबकि ट्रस्टियों का

मत अलग है। इस प्रकार से दुनिया में वसें के अधिकार को लेकर झमेले होते हैं। अपने विश्व विद्यालय की पहली मुख्य संचालिका मातेश्वरी थे। उनके बाद प्यारे ब्रह्मा बाबा ने दादी प्रकाशमणि और दीदी मनमोहिनी को मुख्य प्रशासिका के रूप में नियुक्त किया और जैसे ही ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए तो शिवबाबा ने पहला संदेश यही दिया कि आप बच्चों को भी अपना संविधान (Constitution) बनाना पड़ेगा और संविधान में शिवबाबा की श्रीमत से जो-जो बातें लिखी गईं, उनमें यह बात भी लिखी कि मुख्य प्रशासिका के अव्यक्त होने के बाद मुख्य सह प्रशासिका ही मुख्य प्रशासिका बनेगी और इसी कारण जब दादी प्रकाशमणि जी अव्यक्त हुए तो दादी जानकी, जो सह मुख्य प्रशासिका थी, को मुख्य प्रशासिका के पद पर नियुक्त किया गया। इस दैवी संविधान में ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कारोबार की हर बात को अच्छी रीति से लिखा गया है जिस कारण किसी भी प्रकार का मतभेद या मनभेद नहीं होता।

भारत जब 15 अगस्त 1947 को आजाद हुआ तब पहले भारत का

संविधान बनाया गया जिसके बारे में संसद में काफी चर्चा हुई तथा 26 जनवरी 1950 को यह संविधान लागू हुआ और भारत एक स्वतंत्र गणतांत्रिक देश के रूप में अस्तित्व में आया। हमारे यहाँ भी शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के बाद पहले-पहले संविधान की रचना कराई। दुनिया के हर संविधान में जो-जो बातें होती हैं, वे सभी बातें हमारे संविधान में हैं। भारत के संविधान में लिखा है कि चुनाव द्वारा जनता योग्य व्यक्तियों को अपने प्रतिनिधि के रूप में विधानसभा या संसद में भेजती है जो बाद में मंत्रीमण्डल का गठन कर शासन व्यवस्था को चलाते हैं। वर्तमान समय में दैवी कारोबार करने वाले भी तीन बातों के आधार पर चुने जाते हैं – 1. स्वपसंद, 2. लोकपसंद तथा 3. प्रभुपसंद

लोकपसंदगी की बात जैसे कि चुनाव की बात है। सभी आपस में मिलकर निर्णय करते हैं कि ट्रस्टी के रूप में हमारा कारोबार कौन-कौन करेगा। वर्तमान में लोकपसंदगी के आधार पर नियुक्त की गई आत्मायें भविष्य के राजकारोबार के लिए निमित्त बनती हैं।

भारत को आजाद कराने में अनेकों ने स्वतंत्रता सेनानी के रूप में

भाग लिया और जब भारत आजाद हो गया तब इन्ही स्वतंत्रता सेनानियों में से कुछ गिने-चुने विधानसभा या संसद के सदस्य बने जिनमें से कुछ मंत्री, प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति पद के अधिकारी बने। जैसे ब्रिटिश सरकार की हुकूमत से मुक्त होने के लिए स्वतंत्रता सेनानियों ने स्वतंत्रता संग्राम किया उसी प्रकार से हम सभी ब्रह्मावत्स भी 2500 वर्षों से जो माया का राज्य चला आ रहा है, उससे मुक्त होने और औरों को कराने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। जब माया का राज्य खत्म हो जायेगा और नई राजधानी स्थापन होगी तब माया से स्वतंत्रता दिलाने वाले हम ब्रह्मावत्सों में से ही कोई न कोई उच्च पद प्राप्त करेंगे। जैसे एक स्लाइड 35 मि.मि. की होती है, उसको प्रोजेक्टर में डालते हैं तो बहुत बड़ी छाया सिनेमा स्क्रीन पर आ जाती है, इसी प्रकार से यह संगमयुग की छोटी सी स्लाइड हमें भविष्य का छायाचित्र देती है। वर्तमान में जो यहाँ हो रहा है, वही बात 2500 वर्ष के सतयुग-त्रेतायुग के इतिहास में इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर होगी।

इसी प्रकार जैसे भारत सरकार में केन्द्र और राज्य सरकारें होती हैं, वैसे ही यहाँ पर मुख्यालय तथा जोन्स हैं। भारत सरकार में शासन व्यवस्था

चलाने के लिए केन्द्रीय मंत्रीमण्डल होता है, फिर राज्य स्तर पर मंत्रीगण होते हैं। हमारे यहाँ भी मुख्य प्रशासिका, सह मुख्य प्रशासिका, संयुक्त मुख्य प्रशासिका, महासचिव और सचिव आदि पदाधिकारी के रूप में केन्द्रीय स्तर पर इस विश्व विद्यालय का कारोबार चलाते हैं। व्यवस्था को अच्छी रीति से चलाने के लिए फिर जोन इंचार्ज, सबजोन इंचार्ज की नियुक्ति की जाती है। भारत सरकार में अनेक प्रकार के निगम होते हैं जिनके अध्यक्ष सरकार के राज्य कारोबार में मददगार बनते हैं। इसी प्रकार से यहाँ यज्ञ में अनेक विभाग (Departments) तथा प्रभाग (Wings) हैं। हर विभाग का एक इंचार्ज तथा प्रभाग का एक अध्यक्ष होता है। इस व्यवस्था के कारण जिस प्रकार से यहाँ का कारोबार सुचारु रूप से चलता है, वैसे ही दैवी राज्य में भी सब आपस में एकमत होकर कारोबार चलायेंगे।

इस सारे कारोबार में मुख्य पार्ट हमारी पवित्र बुद्धि का है। पवित्र बुद्धि के सामने कोई भी समस्या आती है तो वह सहज समाधान निकाल लेती है। जब ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए तब हम सब इतने अनुभवी नहीं थे और हर बात में संदेशी बहनों द्वारा



शिवबाबा से मार्गदर्शन लेते थे। मुझे अभी भी याद है, ब्रह्मा बाबा 18 जनवरी को अव्यक्त हुए और 19 जनवरी को उनका पार्थिव शरीर हिस्ट्री हाल में रखा गया। हम सबके मन में अनेक प्रश्न थे और हम आपस में राय-सलाह कर रहे थे। इतने में ही संतरी दादी खड़ी हो गई और संदली पर जाकर बैठ गई। दो मिनट में ही उसकी बुद्धि की रस्सी शिवबाबा ने खींच ली और शिवबाबा का दिव्य अवतरण उनके तन में हुआ। शिवबाबा ने कहा कि ब्रह्मा बाबा के पार्थिव शरीर के अग्नि संस्कार के बाद जो भोग लगेगा, उस समय मैं आऊँगा और आप बच्चों के प्रश्नों के उत्तर दूँगा।

शुरू-शुरू में हमें कारोबार का इतना अनुभव नहीं था इसलिए शिवबाबा से संदेशी द्वारा या उनके अवतरण के समय पर प्रश्न पूछते थे परंतु बाद में हम सबको शिवबाबा ने अनुभवी बना दिया। फिर विदेशों की सेवा भी शुरू हुई। अभी इतने बेहद के कारोबार को चलाते समय बहुत सी बातें सामने आती हैं किंतु अब शिवबाबा ने हमें अनुभवी बना दिया है और परिणामरूप यज्ञ के संचालन कार्य में अब बहुत कम प्रश्न ऐसे रहते हैं जिसके लिए शिवबाबा को संदेश भेजना पड़ता है या उन्हें आना

पड़ता है। पहले तो शिवबाबा बहुत बार आते थे और बहुत लंबे समय तक रहते थे। अब तो साल में केवल 9-10 बार ही पधरामणि होती है और आने के बाद 3-4 घंटे में ही हम सब आत्माओं को हर प्रकार से तृप्त करके चले जाते हैं और कहते हैं, मार्गदर्शन लेना हो तो मेरे पास वतन में आ जाना। परमधाम जाने का कार्यक्रम भी बाबा ने हम बच्चों को बताया है कि बापदादा के साथ चलेंगे, साथ रहेंगे और फिर ब्रह्मा बाप के साथ राज्य करेंगे।

परमात्मा का दिव्य अवतरण और कर्तव्य जो इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय में होता है, ऐसा किसी और धर्म में नहीं होता है। वहाँ धर्मस्थापक अपने धर्म की स्थापना कर चले जाते हैं और फिर भिन्न नाम, रूप, देश, काल के आधार पर इस सृष्टि रंगमंच पर आते हैं और अपने धर्म की रक्षा तथा उसके विस्तार का कारोबार करते हैं। जबकि शिवबाबा संगमयुग पर ही हम बच्चों को भविष्य के राज-कारोबार के लिए लायक बनाते हैं और इतने हद तक लायक बनाते हैं कि हम आत्मायें 2500 वर्ष तक इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अपना कर्तव्य श्रेष्ठ रूप में निभाते हैं जिसके लिए शिवबाबा ने तीन निर्णायक शब्दों का

प्रयोग किया है, अटल, अखण्ड, निर्विघ्न राज्य।

वर्तमान संगमयुग भविष्य का Training Ground है। अपने आप को सर्वगुण, सर्वशक्तियों से इतना सजायें कि भविष्य के राजकारोबार के लिए लायक बन जायें। हम सब साक्षी होकर देख रहे हैं कि किस तरह हम सभी राजकारोबार की लॉटरी लेने के लिए प्रयत्नशील हैं।

यह लेख कृपया आप सभी ध्यान से पढ़ें क्योंकि बीसवीं सदी में यह कहा जाता था कि ब्रिटिश साम्राज्य में कभी भी सूर्य अस्त नहीं होता था। ब्रिटिश साम्राज्य को चलाने के लिए उन्होंने कितनी मेहनत की, फिर भी उनका सूर्य अस्त हो गया। उसकी भेंट में हमें सतयुगी, त्रेतायुगी राज्य कारोबार में कितनी सावधानी रखनी पड़ेगी। ऐसे ही भारत में गुप्ता साम्राज्य, मुगल साम्राज्य और मराठा साम्राज्य भी अपने-अपने समय पर प्रस्थापित हुए और प्रायः लोप भी हो गये। उन सबकी भेंट में यह देवी-देवताओं का दैवी साम्राज्य और राज्य कारोबार निर्विघ्न चले, इसके लिए कितनी तैयारियाँ करनी पड़ेंगी, यह सोचने की बात है और इस पर हमारे सभी पाठकगण सोचें, समझें और परिवर्तन धारण करें। ❖

## धीमा ज़हर तम्बाकू

• ब्रह्माकुमार प्रकाश रातड़िया, मंदसौर

**म**नुष्य स्वयं के सभी प्राणियों में श्रेष्ठ होने का दावा करता है तथा उसे अपनी बुद्धि पर बड़ा गर्व है किंतु आश्चर्य है कि वह इतना भी विचार नहीं कर पाता कि उसे किस वस्तु का सेवन करना है और किससे दूर रहना है। ज्ञान, विज्ञान के व्यापक प्रचार-प्रसार के बावजूद ऐसे लोगों की संख्या बहुत बड़ी है जो बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू का निरंतर उपयोग करते हैं जबकि यह निर्विवाद तथ्य है कि तंबाकू एक धीमा ज़हर है और जीवन तथा स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है।

### सांप से भी

#### अधिक खतरनाक

सांप के काटने से वर्ष भर में दस हजार लोगों के मरने का अनुमान है जबकि तंबाकू के प्रयोग से मरने वालों की संख्या 42 लाख है। इसके बावजूद सांप से हर कोई डरता है किंतु तंबाकू के नशे से ग्रस्त लोग तंबाकू से नहीं डरते। तंबाकू चाहे मुँह में रखकर चबाई जाये या धूम्रपान किया जाये, जीवन के लिए अत्यंत घातक है।

### बुराई को बुराई नहीं समझते

यह एक वैज्ञानिक और

प्रामाणिक तथ्य है कि तंबाकू ज़हर है तथा विभिन्न रोगों का कारण है। जब तक बुराई को बुराई नहीं समझा जायेगा तब तक मनुष्य इससे मुक्ति का उपक्रम नहीं कर सकता। शरीर पर होने वाले इसके खतरनाक प्रभाव को तो तभी महसूस किया जा सकता है जब गंभीर रोग के रूप में यह जीवन को प्रभावित कर दे किंतु व्यसनी व्यक्तियों के चेहरे से प्रखरता व तेज का गायब हो जाना, वृद्धावस्था के लक्षण दिखाई देना, चेहरे की सुंदरता लुप्त हो जाना तथा मुँह से बदबू व गंदगी का प्रसारण होना, इनका तो प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है।

### घातक ज़हर

तंबाकू में कई घातक ज़हर होते हैं जैसेकि निकोटिन, कोलतार, आर्सेनिक, कार्बन डायऑक्साइड, कोयले की गैस आदि-आदि। इन घातक ज़हरीले पदार्थों के प्रभाव से तंबाकू सेवन करने वाले व्यक्ति को कैंसर, हृदयाघात, पक्षाघात (लक्वा), हाथ-पैर गलना (गैंगरिंग), रक्तचाप असंतुलन तथा शारीरिक कमजोरी जैसे रोग होते हैं। मस्तिष्क की क्षमता शिथिल

हो जाती है। स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। अनिद्रा, बेचैनी, उदासी व निराशा के भाव तंबाकू के प्रभाव से व्यक्तित्व का अंग बन जाते हैं। व्यक्तित्व विकृत हो जाता है। कोई भी व्यक्ति ऐसे व्यक्ति के नज़दीक संपर्क में ग्लानि अनुभव करता है क्योंकि दांत व चेहरा गंदे व वीभत्स हो जाते हैं तथा बदबू फैलाते हैं।

### गरीब बनाती है तंबाकू

तंबाकू का व्यसन गरीबी का एक बहुत बड़ा कारण है। पूरी दुनिया में लगभग 50 अरब डालर की तंबाकू व धूम्रपान सामग्री प्रतिवर्ष तंबाकू के नशेड़ियों द्वारा उपयोग कर ली जाती है। तंबाकू से होने वाले रोगों के उपचार पर स्वास्थ्य सेवाओं में प्रतिवर्ष 100 खरब डालर व्यय होता है। यह जानकारी पूरी दुनिया के संदर्भ में सामान्य जानकारी है किंतु इसे व्यक्ति की जेब पर बोझ के रूप में देखने पर इसका भार भारी होना स्पष्ट होगा। जो व्यक्ति दस रुपये प्रतिदिन तंबाकू, बीड़ी या धूम्रपान पर खर्च करता है उसका एक माह का व्यय 300 रुपये और एक वर्ष का व्यय 3,600 रुपये होता है। यदि यह राशि बचत कर ली जाये और बैंक में

जमा की जाती रहे तो इसी जीवन में 40 लाख रुपये तक संग्रह हो जाता है, गरीबी के कारण स्वयं के उचित आहार यहाँ तक कि बच्चों के दूध व शिक्षा पर जो व्यक्ति खर्च नहीं कर पाता है, वह तंबाकू जैसी मद में खर्च करके स्वयं गरीबी को आमंत्रित करता है।

### गलत संगत का असर

किशोरावस्था में स्वयं के व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने के लिए, उचित मार्गदर्शन के अभाव और गलत संग में पड़कर जिज्ञासावश धूम्रपान का स्वाद चखने वाला नवयुवक धीरे-धीरे इसे कब आदत और व्यसन बना लेता है, उसे आभास ही नहीं हो पाता किंतु जब तक उसे मालूम होता है कि यह एक घातक बुराई है तब तक वह इस गंदी आदत के प्रति स्वयं को लाचार पाता है और अपने आपको इतना मज़बूत नहीं कर पाता कि इसे त्याग दे। कई लोग यह भ्रम पाल लेते हैं कि इससे तनाव में कमी आती है। कई लोग यह कहते सुने जाते हैं कि समय बिताने और विश्राम के लिए यह एक सहारा है। सिनेमा संस्कृति और मनमौजीपन के प्रभाव में आकर भी कई लोग धूम्रपान की आदत के शिकार हो जाते हैं। विज्ञानों का आकर्षण व धूम्रपान करते हुए

आकर्षक चित्रों को देखकर भी कुछ लोग धूम्रपान अपना लेते हैं किंतु भोले-भाले लोगों को इसके दुष्परिणामों का तब पता लगता है जब वे जीवन में बहुत कुछ खो चुके होते हैं।

### एक संकल्प हो सकता है वरदान

जब रोगग्रस्त होकर शरीर व मस्तिष्क पर इसके दुष्परिणामों को प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं तब कई लोगों को यह अहसास हो जाता है कि उन्हें बहुत बुरी आदत लग गई है किंतु फिर भी वे अपने आपको विवश समझकर इससे मुक्ति प्राप्त नहीं करते हैं किंतु यदि धूम्रपान से पीड़ित कोई व्यक्ति स्वयं को इससे मुक्त करना चाहता है तो यह बिल्कुल भी कठिन नहीं है, केवल एक संकल्प की आवश्यकता है, तत्क्षण इसका त्याग हो सकता है। ऐसे कई उदाहरण प्रत्यक्ष देखे गये हैं कि लगातार धूम्रपान करने वालों ने सदबुद्धि आते ही एक क्षण में इसका त्याग किया है। कुछ लोगों को यह भ्रम रहता है कि बरसों तक धूम्रपान करने के बाद अब इसको छोड़ देने से जीवन और स्वास्थ्य पर कोई न कोई प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा किंतु यह वास्तविकता नहीं है। सच्चाई तो यह है कि 'जब जागे तब सवेरा।' जिस

दिन व्यक्ति धूम्रपान त्यागता है उसी दिन से इसके दुष्परिणामों से उसे मुक्ति प्राप्त होती है। कुछ दिनों तक उसे अटपटा लग सकता है किंतु इसका कोई प्रतिकूल प्रभाव शरीर पर नहीं होता है।

### सार्वजनिक धूम्रपान अपराध है

विभिन्न नशों की तरह तंबाकू भी समाज के लिए घातक है। इसे अब समाज और सरकार धीरे-धीरे अनुभव करने लगे हैं। अफीम पर पूर्ण प्रतिबंध है, शराब पर भी विभिन्न प्रकार के नियंत्रण हैं किंतु इनसे कहीं व्यापक और अधिक खतरनाक प्रभाव तंबाकू सेवन और धूम्रपान के हैं। इसलिए सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान को दंडनीय अपराध घोषित किया गया है। इसके विज्ञापन तथा शैक्षणिक संस्थाओं के निकट व 18 वर्ष से कम आयु के व्यक्तियों को विक्रय को भी दंडनीय अपराध घोषित किया गया है। इस कानून में विभिन्न अपराधों के लिए अर्थदण्ड से लेकर पाँच वर्ष तक की सज़ा का प्रावधान किया गया है।

(प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास करने वाले 9 लाख बहनें-भाई हर प्रकार की नशीली चीजों के सेवन से पूर्णतया मुक्त हैं।)

## व्यर्थ से बचिए

यह संभव कैसे हुआ? जो लोग सारे व्यसनों की कड़ी गुलामी के साथ इस विद्यालय के संपर्क में आये थे। उन्होंने यहाँ आकर जब आत्म-साक्षात्कार किया और यह समझा कि मैं आत्मा ही सतयुग-त्रेतायुग में देव रूप में थी, मंदिरों में सुसज्जित मूर्तियाँ मेरे ही देव जीवन की यादगारें हैं, तो इस स्मृति के आते ही मनोबल जागृत हो गया। मन ने माना कि जब देवों की जड़ पत्थर की मूर्तियों पर तो प्याज-लहसुन तक नहीं चढ़ाया जाता, फिर मैं चेतन आत्मा, अपने शरीर रूपी मंदिर में इन व्यसनों रूपी अछूत चीजों को क्यों चढ़ाऊँ। इस समझ के साथ-साथ राजयोग द्वारा परमात्मा से सर्व संबंधों का सुख प्राप्त कर, सर्व ईश्वरीय शक्तियाँ प्राप्त कर ये सभी सदाकाल के लिए व्यसनमुक्त बन गए। राजयोग के अभ्यास से आत्मा, शान्ति के सागर परमात्मा शिव का सान्निध्य प्राप्त कर सदाकाल की शान्ति से भरपूर हो जाती है। व्यसन छोड़ने के इच्छुक सभी भाई-बहनों से नम्र निवेदन है कि वे भी ब्रह्माकुमारीज द्वारा प्रदत्त निःशुल्क ज्ञान और राजयोग के प्रशिक्षण का लाभ उठाएँ। शरीर रूपी मंदिर को कांतिहीन और अकाल काल का प्रास बनने से बचाएँ – सम्पादक)

व्यर्थ अर्थात् जो अर्थरहित हो, जिसका कोई अर्थ न निकले, जो बात हमारे लिए उपयोगी न हो, जिससे हमारा कोई लेन-देन न हो। बीते हुए कल को, अनिश्चित भविष्य को याद करना व्यर्थ है। इस व्यर्थ के कारण ईर्ष्या होती जिससे हम स्नेह और सहयोग से वंचित हो जाते।

जैसे अनावश्यक वस्तुओं का बोझ शरीर को भारी कर देता है, वैसे ही अनावश्यक विचारों का बोझ मन को भारी कर देता है इसलिए तन, मन से उतना ही उठाना चाहिए जितना आवश्यक हो।

व्यर्थ संकल्प चलना कमजोर आत्मा की निशानी है। सतयुग-त्रेतायुग में व्यर्थ संकल्प नहीं थे इसलिए आत्मा की इतनी शक्ति खर्च नहीं हुई। द्वापर में संकल्प तेज गति से चले तो शक्ति खर्च हुई। कलियुग में अशुद्ध और व्यर्थ संकल्प ही हमारी आत्मिक शक्ति को क्षीण करते हैं। ये हमारी विशेषताओं और योग्यताओं को समाप्त करते हैं। ये तनाव की जड़ हैं। इनसे कई मानसिक और शारीरिक बीमारियाँ होती हैं।

आज व्यक्ति के 80 संकल्प व्यर्थ और नकारात्मक चलते हैं जिससे वातावरण नकारात्मक बनता है। व्यर्थ से मुक्त होने के लिए सकारात्मक, समर्थ, शुद्ध से जुड़ना पड़े अर्थात् मन में सदा श्रेष्ठ, शुद्ध संकल्प ही चलें, इसके लिए निम्न बिन्दुओं पर ध्यान दें –

सर्व के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण, शुभभावना रखना; क्या, क्यों, कैसे की कौवा वृत्ति से मुक्त रहना; गुणग्राही बनना; परचिंतन, परदर्शन, परमत से मुक्त रहना; मन, बुद्धि को बिज़ी रखना; संकल्प, बोल और कर्म पर ध्यान रखना; मन और बुद्धि को लक्ष्य की ओर एकाग्र करना; दुनियावी साधन, संबंध, वैभव के प्रति आकर्षणमुक्त; परिस्थिति विपरीत होने पर तुरंत बिन्दी लगाने का अभ्यास हो; व्यर्थ को सुनकर समाप्त करने के बजाय व्यर्थ सुने ही नहीं क्योंकि सुनने में भी शक्ति और समय बर्बाद होता है।

जिस प्रकार गृह निर्माण में एक-एक ईंट का महत्व है, ठीक उसी प्रकार श्रेष्ठ चरित्र के निर्माण में हमारे एक-एक संकल्प का महत्व है क्योंकि जैसी वृत्ति वैसी कृति और वैसी ही सृष्टि। कहा भी गया है, जब रहेंगे व्यर्थ से मुक्त, तभी होंगे उन्मुक्त, जितना व्यर्थ से इनोसेन्ट बनेंगे, उतना ही सेन्ट बनेंगे।

# ईश्वर मर्जी और मनमर्जी

एक व्यक्ति रास्ते में जा रहा था, हमने कहा, पास में ही ब्रह्माकुमारी आश्रम है, पवित्र बहनें भगवान का पावनकारी ज्ञान सुनाती हैं, आप भी लाभ लीजिए। उस व्यक्ति ने कहा, बहन जी, भगवान की मर्जी होगी तो जरूर आयेंगे। उसकी बात सुनकर मुझे लगा कि शायद भगवान की मर्जी से ही यह सब काम करता है। थोड़ी दूर चलने के बाद वह एक शामियाने में घुस गया। वहाँ कुछ नाच-गाने, तमाशे के प्रोग्राम चल रहे थे। वह उन्हें देखने में मशगूल हो गया और मैं लगभग आधे घंटे बाद पुनः वहाँ से गुजरा तो देखा कि वो अभी वहीं कनरस में डुबा खड़ा था।

## ईश्वर को ऐसा ही मंजूर था

यह एक व्यक्ति की बात नहीं, करोड़ों की संख्या में ऐसे लोग मिल जायेंगे जो केवल ईश्वरीय ज्ञान सुनने की बात आते ही 'ईश्वर की मर्जी' नाम का ताला लगाकर अपने सुख-सौभाग्य के द्वार अपने हाथों बंद कर लेते हैं लेकिन जब 'कनरस', 'मुखरस' और अन्य इंद्रियरस की बात आती है तो उन्हें ना ईश्वर याद आता है और ना उसकी मर्जी बल्कि

वे विवेक की आँखें 'मन की मर्जी' के ताले से बंद करके पूरे के पूरे इंद्रिय आकर्षण के कीचड़ में कूद पड़ते हैं। हाँ, उस कीचड़ में कूद पड़ने के बाद मन और शरीर की जो हानि होती है, उसे देख फिर कह उठते हैं, क्या करें ईश्वर को ऐसा ही मंजूर था।

## मर्जी – भगवान की या खुदा की

विचारणीय बात है कि जो लोग प्रतिदिन ईश्वरीय ज्ञान सुन रहे हैं, क्या वे इसलिए सुन रहे हैं कि उनके लिए तो भगवान की मर्जी है और जो नहीं सुन रहे, उनके लिए मर्जी नहीं है। क्या भगवान भी मर्जी या ना-मर्जी के रूप में पक्षपात करते हैं। भगवान की भी मर्जी, ना-मर्जी का कोई आधार होता है या वे भी मनुष्यों की तरह मूडी हैं जब चाहे जिस पर मर्जी कर दी और जब चाहे जिसके प्रति ना-मर्जी कर दी। लेकिन ऐसा सोचना तो भगवान की महिमा के विरुद्ध जाना है क्योंकि भगवान तो कल्याणकारी, न्यायकारी और पक्षपात रहित हैं, वे तो सबके हितचिन्तक और शुभेच्छु हैं। जैसे गुड़ की रोटी सब तरफ से मीठी ही मीठी होती है, ऐसे ही वो तो मिठास

## • ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

के सागर हैं। स्थूल सागर तो नमकीन भी होता है परंतु भगवान तो मीठे ही मीठे हैं। स्थूल सागर की लहरें तो नुकसान भी कर देती हैं परंतु ज्ञान-सागर परमात्मा पिता की ज्ञान-लहरें तो सुख की रिमझिम बरसाने वाली होती हैं। फिर उनका तो नाम सदाशिव है, वे तो सर्वेषु कालेषु अर्थात् सभी कालों में, सभी प्राणियों का उद्धार और त्राण करने वाले हैं तो फिर यह कहना कि भगवान की ऐसी ही मर्जी थी, सोचिए, भगवान की मर्जी थी या उनकी खुद की मर्जी थी। इंद्रिय रस में वे खुद डूबे थे या भगवान डुबोने आया था।

जब किसी अच्छी बात का, अच्छी चीज़ का, कल्याणकारी मार्ग का निमंत्रण मिले तो यह मानकर चलना चाहिए कि इसका सूत्रधार परमात्मा ही है। जब किसी गलत, गंदी, अल्पकालिक आकर्षण की चीज़ का सान्निध्य मिले तो समझ लीजिए कि उसके पीछे आसुरी शक्ति ही काम कर रही है, फिर चाहे ये दोनों ही प्रकार की शक्तियाँ दिखें या न दिखें।

**भगवान की अर्जी,  
मनुष्यात्माओं के नाम  
मनुष्य जन्म-जन्म भगवान के**

आगे अनेक प्रकार की अर्जियाँ डालता आया है। कभी उसने दर्शन के लिए अर्जी डाली, कभी धन के लिए। कभी निरोगी काया मांगी, कभी पद और प्रतिष्ठा। कभी धर्म की रक्षा चाही, कभी इज्जत की। कभी सुख-शान्ति मांगी और कभी मुक्ति-जीवनमुक्ति। करोड़ों मनुष्य की करोड़ों प्रकार की अर्जियों ने

भगवान के भी सिंहासन को हिला दिया। इन अर्जियों को पूरा करने के लिए वर्तमान समय स्वयं भगवान ने भी मनुष्यात्माओं के आगे एक अर्जी डाली है – हे मेरे प्यारे वत्सो, इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर मैं निराकार परमात्मा पिता, साधारण मानवीय तन में अवतरित होकर 21 जन्मों के लिए निरोगी तन, स्वच्छ मन, पवित्र

और अखुट धन और स्नेही जन प्राप्त करने का भाग्य दे रहा हूँ। इसमें तुम्हारी सभी अर्जियों की पूर्ति समाहित है। अब तुम कल्प के इस अन्तिम जन्म में, साधारण मानवीय तन में अवतरित मुझ अपने पिता को पहचानो और अर्जियाँ डालना बंद कर अब सही अर्थों में मेरी मर्जी पर चलो। ❖

## जादू नहीं, सत्यता की शक्ति

जादू रूपी कला मनोरंजन के लिए है लेकिन मनुष्य के जीवन में ऐसा श्रेष्ठ परिवर्तन जो उसे सुख-शांति से भरपूर कर दे, जादू से संभव नहीं, यह तो सत्यता की शक्ति से ही संभव है। जब कोई भाई-बहन ईश्वरीय ज्ञान-योग के मार्ग पर चलना शुरू करते हैं तब उनमें श्रेष्ठ परिवर्तन आता है, उसे देख कई लोग कहते हैं, इसे जादू लग गया। यह मात्र भ्रांति एवं अंधविश्वास है। वास्तव में जादू जैसी कोई बात नहीं होती है। सत्यता की शक्ति को कोई जादूगरी दिखाने की आवश्यकता ही नहीं है, वह समय प्रमाण स्वतः सिद्ध होती है। सोचने की बात है कि यदि जादू हो तो सभी पर होना चाहिए, एक या दो पर क्यों? कोटों में कोई को ही क्यों लगता है यह जादू? आज दुनिया में एक से बढ़कर एक बुरे कृत्य खुलेआम हो रहे हैं। उसके लिए कोई नहीं कहता कि ये कौन जादू कर रहा है जो बुराई बढ़ती जा रही है। पर जब किसी में बुराई का स्थान अच्छाई लेने लगती है तब कह दिया जाता है, जादू लग गया।

हर व्यक्ति की रुचि अपनी-अपनी होती है। उस रुचि के अनुसार वह अपने क्षेत्र को चुनता है जैसे राजनीति वाला राजनीति में जायेगा, अभिनय वाला अभिनय के क्षेत्र में जायेगा। इसी तरह, आध्यात्मिक रुचि रखने वाले ईश्वरीय मार्ग पर चलते हैं व अध्यात्म की शक्ति से सभी कार्य अच्छे से अच्छे करते हैं। जिसकी रुचि जिधर होती है, वह वैसा ही संग ढूँढ़ता है। यदि ज़ोर ज़बर्दस्ती करके हम उसे अपने ढंग से संग दें तो वह ज्यादा दिन तक नहीं चलेगा। अतः ब्रह्माकुमारीज में कोई जादू की शक्ति कार्य नहीं कर रही है। यह तो साक्षात् परमात्मा की शक्ति है। परमात्मा शिव इस धरा पर अवतरित होकर जन्म-जन्मांतर का भाग्य बना रहे हैं। उसका फायदा स्वयं भी लें व औरों को भी प्रेरित करें। ये परमात्मा का सत्य कार्य चलता रहा है और चलता रहेगा। एक दिन समस्त संसार इस सत्य कार्य को मानेगा और परमात्म शरण में आयेगा।

ब्रह्माकुमारी आशा, चित्तौड़गढ़



# सहनशीलता – अमूल्य गुण

• ब्रह्माकुमार भारत भूषण, पानीपत

**स**हनशीलता मनुष्य के जीवन का आभूषण है। सहनशीलता को अपनाने से सर्व दिव्य गुण तथा शक्तियाँ अपने आप आ ही जाते हैं। वास्तव में, सहनशील व्यक्ति शहंशाह अर्थात् सर्व के दिलों पर राज करने वाला है।

## कब तक सहन करूँ?

आखिर कहाँ तक सहन करूँ, सहनशक्ति की भी तो कोई सीमा होती है, एक बार, दो बार, पाँच बार, कितनी बार सहन करूँ, इससे अधिक मेरे से सहन नहीं होता, यह तो मेरी सहनशीलता का नाजायज़ फायदा उठा रहा है, सिर पर ही चढ़ता जा रहा है – ऐसे विचार यदि मन में आते हैं और सहनशीलता की सीमा निर्धारित करनी है तो कुछ उदाहरण अपने सामने रखें जैसे कि

1. ईसा मसीह ने मरते समय कहा कि हे प्रभु, जिन्होंने मुझे मारा है, वे अनजान हैं, उन्हें क्षमा करना।
2. ज़हर देने के निमित्त व्यक्ति को स्वामी दयानन्द जी ने क्षमा कर दिया।
3. गुरु गोविन्द सिंह जी के दो छोटे-छोटे बच्चे हँसते-हँसते दीवारों में चिने गये।
4. भक्तिन मीरा बाई ने प्रभु प्रेम में ज़हर का प्याला पीया।

## क्या है सहनशीलता?

निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, हार-जीत, सर्दी-गर्मी, लाभ-हानि सभी में एक समान रहना, इसी को कहते हैं सहनशीलता। यदि कोई कहता है, मुझे पता है, मैं कितना सहन कर रहा हूँ या मुझे कितना सहन करना पड़ता है, यह भी वास्तविक सहनशीलता नहीं है क्योंकि सहन करना तो सहनशील व्यक्ति का धर्म है, उसका शील व चरित्र है। यदि कोई उसे एहसास कराए भी कि कमाल है आपकी सहनशक्ति की तो भी उसका यही जवाब होगा कि इसमें क्या बड़ी बात है, मुझे तो लग ही नहीं रहा कि मैं सहन कर रहा हूँ।

## सहनशीलता के दो उदाहरण

एक महिला प्रतिदिन ईश्वरीय ज्ञान सुनने लगी। उसके पति को यह अच्छा नहीं लगा। रोकने पर जब वह नहीं रुकती थी तो वह पिटाई करता था। फिर भी वह सेवाकेन्द्र पर जाती रही। एक दिन जैसे ही सेवाकेन्द्र से आई, पति के हाथ में तेज धार वाला चाकू था। पति ने चाकू उसके हाथ पर मारा। नसें कट गईं, खून बहने लगा, खून पति के हाथ पर भी लग गया। ब्रह्माकुमारी महिला ने अपने हाथ की परवाह ना करके, दूसरे हाथ से कपड़ा उठाया और पहले पति

के हाथ पर लगा खून पोंछने लगी। इतनी पीड़ा में भी प्रेम और शान्ति से व्यवहार किया। वह व्यक्ति पत्नी की इतनी सहनशीलता देखकर द्रवित हो गया और अगले दिन से खुद भी उसको साथ लेकर सेवाकेन्द्र जाने लगा।

एक अन्य महिला ने भी जैसे ही ईश्वरीय ज्ञान सुनना प्रारंभ किया तो उसकी सास ने विरोध किया। जब विरोध करने पर भी वह नहीं रुकी तो हर दूसरे दिन सास उसकी जुत्तियों से पिटाई करती। फिर भी बहू सास से आदर-सत्कारपूर्वक व्यवहार रखती रही। एक दिन बहू राजयोग के अभ्यास में बैठी थी तो सास को उससे फ़रिश्ते का साक्षात्कार हो गया। तत्पश्चात् उसने अपनी बहू से माफी माँगी और फिर खुद भी प्रतिदिन ज्ञान सुनने जाने लगी।

## कैसे बनें सहनशील?

सहनशीलता अपनाने के लिए निम्नलिखित आठ सूत्र याद रखें –

### 1. रहम भाव:-

परमपिता परमात्मा की तरह यदि हम रहम से भरपूर होंगे तो हर आत्मा की गलतियों पर भी रहम भाव रहेगा और सहनशील बने रहेंगे।

### 2. मातृवत स्नेह:-

अपने को जगत अम्बा समझें

और स्नेह का सागर बनकर रहें। सोचें, माँ अनेक गल्लियाँ करने पर भी अपने बच्चे के प्रति शुभभावना, शुभकामना रखती है, क्या ऐसे ही मैं भी हूँ?

**3. हिसाब-किताब चुक्तू:-** अनेक आत्माओं से जन्म-जन्मांतर के कर्मों के हिसाब-किताब हैं। इसलिए कभी कोई दुख दे तो दुखी न होकर ऐसा समझें, हिसाब-किताब चुक्तू हो रहा है।

**4. शहंशाह बनने की तैयारी:-**

भगवान ने कहा है, यदि सहन करेंगे तो शहंशाह बनेंगे। जितना अधिक सहन करेंगे, उतने बड़े शहंशाह बनेंगे इसलिए खुशी-खुशी सहन करें।

**5. प्रभु-प्रेम की निशानी:-**

सहन करना प्रभु-प्रेम की निशानी है। हम उसके प्यार में सहन करते रहें क्योंकि भगवान ने आज्ञा दी है कि निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, हार-जीत सबमें समान रहना है।

**6. निश्चित पार्ट की स्मृति:-**

सदैव स्मृति रखें कि यह सृष्टि एक नाटकशाला है। इसमें प्रत्येक आत्मा का अपना-अपना निश्चित पार्ट है। नाटक में अच्छे पार्ट और बुरे पार्ट भी होते हैं। इसमें पार्टधारी का कोई दोष नहीं। इसलिए कभी भी दूसरों के पार्ट को देखकर बुरा महसूस नहीं करना है। ध्यान रखें कि

मेरा पार्ट अच्छा हो।

**7. अपकारी पर उपकार:-**

अपने जीवन में ऐसी घटनाओं की सूची तैयार करें जब हमने बुरा करने वाले का भी भला किया हो तथा उसके बुरे को, संकल्प तक भी महसूस न किया हो, न वर्णन किया

हो। क्षमा कर दिया हो।

**8. राजयोग का अभ्यास:-**

जितना-जितना हम स्वयं को आत्मा समझकर प्रेम के सागर परमपिता परमात्मा शिव ज्योतिबिन्दु के प्रेम में डूब जायेंगे, उतना स्वतः ही सहनशील बन जायेंगे। ❖

### परिस्थितियाँ हैं खाद

एक कन्या बगीचे में घूम रही थी। कुछ देर बाद उसकी दृष्टि एक सुन्दर से फूल पर पड़ी जिसका रंग और सुगंध उसे बहुत अच्छे लगे। वह फूल के अधिक करीब जाकर गौर से देखने लगी तभी उसकी निगाह फूल के पौधे की जड़ की तरफ गई और वह भय से चिल्ला पड़ी, ओह! इतना सुंदर फूल और इसकी जड़ इतनी गंदी है! उसने पौधे को उखाड़ लिया और बगीचे में बने हौज में जाकर जड़ें धोने लगी। कुछ देर बाद वह फूल मुरझा गया।

माली उस कन्या की करामात देख झुंझला पड़ा और चिल्लाया, ओ लड़की, यह तुमने क्या किया? मेरे बगीचे का सबसे सुंदर पौधा नष्ट कर दिया। कन्या ने रोते हुए कहा, परंतु मैं नहीं चाहती थी कि पौधा इतनी गंदी जगह में रहे क्योंकि उसका फूल बहुत सुंदर था। 'बेटी, वो कीचड़ ही उस फूल के लिए उपयुक्त जगह है, बिना कीचड़ यह पौधा और नहीं खिल सकता', माली ने समझाया।

कभी-कभी हम भी अपनी परिस्थितियों पर गुस्सा करने लगते हैं और अपने को उखाड़कर किसी ऐसी जगह चले जाना चाहते हैं जहाँ मुसीबतों रूपी खाद न हो। परंतु जैसे कीचड़ के बिना कमल नहीं खिल सकता, उसी प्रकार विपरीत परिस्थितियों को पार किये बिना जीवन भी महान नहीं बन सकता। हर परिस्थिति में रहते संतोष को धारण करने से ही सच्चे आनंद का पौधा पनपता है। वर्तमान समय में परमपिता स्वयं इस धरा पर आकर हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं और संतोष तथा धैर्य का पाठ पढ़ा रहे हैं। हमें भी चाहिए कि हम भी उनकी श्रीमत् पर चलें, उनकी शिक्षा को जीवन में उतारें और अन्य मनुष्यात्माओं को भी उनके ज्ञान से लाभान्वित करें।

ब्रह्माकुमारी गायत्री वर्मा, जोकट (म.प्र.)

# विज्ञान का सहयोग ईश्वरीय सेवा में

• ब्रह्माकुमार पीयूष, लोधी रोड, दिल्ली

**भा**रत सरकार के संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीनस्थ राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र (नेशनल इंफोर्मेशन सेन्टर) के वरिष्ठ अधिकारियों हेतु दिल्ली स्थित एन.आई.सी. के कारपोरेट कार्यालय में 'तनाव से मुक्ति की युक्ति' विषय पर प्रवचन आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम कई अर्थों में अनूठा था। उदाहरणस्वरूप, सेमीनार हॉल में सामने लगे विशाल पर्दे पर भारत के सभी एन.आई.सी. केन्द्रों – पूणे, छत्तीसगढ़, मुम्बई, भोपाल, कोहिमा, गोवा, इटानगर, हैदराबाद, चैन्नई, चंडीगढ़, लखनऊ, जयपुर, अहमदाबाद आदि के प्रतिभागी दिखाई दे रहे थे। श्रोताओं ने वहाँ बैठे प्रश्न किये और हमने दिल्ली स्थित एन.आई.सी. स्टूडियो से उत्तर दिये। यह दृश्य सचमुच रोमांचित और आश्चर्यचकित करने वाला था। स्क्रीन पर सभी के चित्र एकदम साफ दिख रहे थे तथा आवाज़ भी क्लीयर थी। योगाभ्यास के समय भी सभी प्रतिभागी एकाग्रचित्त होकर बैठे। दो घंटे के कार्यक्रम में टॉक, कामेंट्री द्वारा योगाभ्यास एवं प्रश्नोत्तर आदि हुए। प्रस्तुत हैं कार्यक्रम में पूछे गये चुनींदा प्रश्न और उनके उत्तर – एन.आई.सी. के पूणे स्थित केन्द्र से एक श्रोता ने पूछा –

**प्रश्न:- मेरा निकट मित्र अपने जीवन से हताश और नाउम्मीद हो गया है, क्या राजयोग द्वारा उसे ठीक किया जा सकता है?**

**उत्तर:-** आज की भागमभाग और गलाकाट प्रतियोगिता की ज़िन्दगी में हताशा, निराशा, कुण्ठा, अवसाद आदि रोग आम हो गये हैं। चूंकि ये सभी रोग मन से संबंधित हैं अतः सर्वप्रथम हमें अपने मन को श्रेष्ठ विचारों से भरपूर करना होगा, इसी प्रक्रिया को राजयोग कहा जाता है। हर व्यक्ति के सामने गिलास आधा भरा और आधा खाली दोनों ही विकल्प होते हैं। यदि मैं प्रथम विकल्प को चुनूँ तो

अवश्य ही मेरा जीवन खुशियों से भरपूर हो जायेगा। इसके विपरीत दूसरा विकल्प मानव जीवन को तनाव और अवसाद के गहरे गर्त में धकेल देता है। लेकिन विडंबना यह है कि आज अधिकतर युवा नकारात्मकता की ओर शीघ्र आकर्षित हो जाते हैं और अपने कैरियर को चौपट कर बैठते हैं। कृपया आप अपने मित्र को शीघ्र ही निकट के ब्रह्माकुमारी केन्द्र पर ले जायें। राजयोग का साप्ताहिक कोर्स अवश्य ही आपके मित्र के जीवन को आशा और उम्मीद से भरपूर कर देगा।

राजेश गेरा, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, दिल्ली ने जानना चाहा –

**प्रश्न:- क्या विज्ञान और आध्यात्मिकता दो अलग-अलग रास्ते नहीं हैं?**

**उत्तर:-** मेरे विचार में तो यह प्रश्न ही नहीं होना चाहिए क्योंकि साइंस और स्पिरिचुअल साइंस वस्तुतः एक-दूसरे के पूरक हैं, एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। संसार में जितने भी नामी-गिरामी वैज्ञानिक हुए हैं, उन सभी की प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अध्यात्म के प्रति निष्ठा रही है। वर्तमान में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों में शुमार डा.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम भी जितने विज्ञान के प्रति आस्थावान हैं, उससे भी कहीं अधिक उनकी अध्यात्म विज्ञान में भी रुचि है। वास्तविकता तो यह है कि वे ब्रह्माकुमारी द्वारा सिखाये जाने वाले योग के प्रति काफी अनुरागी हैं।

एन.आई.सी. भोपाल से एक श्रोता ने पूछा –

**प्रश्न:- राजयोग के लिए सर्वोत्तम समय कौन-सा है?**

**उत्तर:-** प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त का समय राजयोग मेंडिटेशन के लिए सर्वोत्तम समय है। उस समय किया गया राजयोग तन और मन दोनों को दुरुस्त रखता है। बाकी हमारा लक्ष्य राजयोगी जीवन जीने का होना

चाहिए जिसका भावार्थ है, कोई भी कार्य करते हुए, यात्रा करते, भोजन करते हर समय हमारे मन की तार प्रभु से जुटी रहे परिणामस्वरूप, हमें हर कार्य में सफलता मिलती है।

डॉ.शैफाली, एन.आई.सी. की डीडीजी ने पूछा—

**प्रश्न:- बच्चों के लिए राजयोग की शिक्षा कितनी उपयोगी है?**

**उत्तर:-** बच्चे कोरे कागज़ के समान होते हैं, उन्हें जो भी सिखाया जाये, उसे वे तुरंत ग्रहण कर लेते हैं। आज के बच्चों की सबसे बड़ी समस्या एकाग्रता का न होना है। मैं समझता हूँ, राजयोग की सबसे बड़ी देन ही है, एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाना। योग का नित्य का अभ्यास बच्चों की स्मरण शक्ति, आत्म-बल, मनोबल, आत्मविश्वास को भी बढ़ाता है फलस्वरूप, वे मात्र पढ़ाई में ही नहीं अपितु जीवन की सकारात्मक दौड़ में भी अन्य बच्चों से आगे निकल जाते हैं।

गुवाहाटी से प्रश्न पूछा गया—

**प्रश्न:- जो अभी-अभी आपने राजयोग कराया, उससे मेरे मन को बहुत शान्ति और शक्ति मिली है लेकिन इसे स्थायी कैसे बनाऊँ?**

**उत्तर:-** राजयोग के निरंतर अभ्यास से शान्ति और शक्ति बढ़ती जाती है। वस्तुतः प्रेम, शक्ति, आनंद, पवित्रता..ये सभी आत्मा के मूल गुण

हैं लेकिन बाह्यमुखता और भौतिकवादिता के बढ़ते प्रभाव के कारण ये सभी गुण हमसे दूर होते जा रहे हैं। जीवन का वास्तविक सुख लेने के लिए अपने अंदर झांक कर देखना होगा, अपने वास्तविक रूप को पहचानना होगा और अपने आत्मीय पिता से संबंध जोड़ना होगा। इस विधि को ही सहज शब्दों में राजयोग कहते हैं।

सुश्री रचना श्रीवास्तव, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक ने जिज्ञासा ज़ाहिर की—

**प्रश्न:- राजयोग और बाबा रामदेव द्वारा सिखाये जाने वाले प्राणायाम आदि एक ही हैं अथवा भिन्न?**

**उत्तर:-** बाबा रामदेव जी का पतंजलि योग संस्थान मनुष्यों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कर रहा है, यह निश्चित रूप से सराहनीय कार्य है लेकिन राजयोग एक समग्र प्रक्रिया है जिसका मानव मन से गहरा संबंध है। उदाहरणस्वरूप, आज आयुर्विज्ञान ने भी यह माना है कि 80-90 प्रतिशत रोग मनोकायिक हैं अतः सर्वप्रथम मन को निरोगी बनाने की ज़रूरत है। राजयोग सभी योगों का राजा है, राजयोग के नित्य अभ्यास से मन को संबल मिलता है। स्वस्थ मन, तन को स्वस्थ करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

**भाग्य बनाना सीखो**  
**ब्र.कु. घमंडीलाल अग्रवाल,**  
**गुड़गाँव**

अपने गुण से और कर्म से अपना भाग्य बनाना सीखो। नहीं ईर्ष्या से कुछ मिलता, ईर्ष्या-भाव भगाना सीखो।।

पुजा सदा गुणवान जगत में, उठा सदा गुणवान जगत में, परनिंदा तज नेक राह पर चला सदा गुणवान जगत में। बाबा के बच्चे हो तुम तो जीवन को महकाना सीखो।।

ध्यान वही है जो ताकत दे, ज्ञान वही है जो हिम्मत दे, इंसानों की भरी भीड़ में व्यक्ति वही जो सत्संगत दे। व्यक्ति-व्यक्ति की अभिव्यक्ति से, अपना मेल बढ़ाना सीखो।।

ज्ञान सहारा देता आया, मान सहारा देता आया, रहे अधर पर मीठा-मीठा गान सहारा देता आया। दुख आयेगा पास किस तरह दुख को दूर हटाना सीखो।।

कहने से करना है अच्छा, इच्छायें तजना है अच्छा, क्रोध, लोभ व मोह मिटाकर निर्विकार रहना है अच्छा। छाएं भी यदि घन संकट के हंसना और हँसाना सीखो।।

## जेल में मिला नया जीवन

• ब्रह्माकुमार सुरेन्द्र, राउरकेला जेल

मैं रामगढ़ कैन्ट, झारखंड का रहने वाला हूँ। मैं 12 से 14 घंटे व्यापार में समय देकर पैसा कमाता और पैसा ही सब कुछ है, ऐसा समझकर पैसे के पीछे भागता रहता। घर में बच्चों और परिवार को समय नहीं दे पाता था। मैं सोचता था कि पैसा ही सबकी ज़रूरत है, पैसे से सब खुश हैं, मैं भी पैसे में ही सुख अनुभव करता था। भौतिक सुख की चाह ने मुझे धीरे-धीरे हर व्यसन में लिप्त कर दिया। पैसे के नशे के कारण शराब, अन्य व्यसन, लोभ, क्रोध, अहंकार ने मुझ में स्थान बना लिया। जो चीज़ नहीं खानी चाहिए वो सब मैं खाने-पीने लगा। मैं कोई भी चीज़ ऐसे खाता था जैसे खाने के लिए ही जी रहा हूँ, पीने के लिए ही ज़िन्दा हूँ। धीरे-धीरे ज़रूरतें बढ़ने लगीं, मैं कर्जदार बनता गया और विचार विनाश काले विपरीत बुद्धि जैसे होते गए। मेरे स्लोगन थे, 'कर्जा में दर्जा बढ़ता है', 'ज़िन्दा हूँ खाने के लिए' और 'जब तक जीना है तब तक पीना है' – इन स्लोगनों ने मुझे भगवान से बहुत दूर कर दिया। ऐसी सोच के कारण ही मैं जेल में आ गया।

जेल में आने के बाद मुझे लगा कि अब दुख के दिन शुरू हो गये लेकिन कुछ ही दिनों में सुख के सागर,

दुखहर्ता, सुखकर्ता परमपिता परमात्मा शिवबाबा ने मुझे बहुत प्यार से अपनी शरण में ले लिया। जैसे कोई छोटा बच्चा अपने बाप की बाँहों में समा जाता है, शिवबाबा की मुरली क्लास में प्रथम दिन मुझे ऐसा ही बाँहों में समाने का एहसास हुआ। फिर मैं प्रतिदिन मुरली क्लास में जाने लगा। सच्चे सुख का एहसास बढ़ने लगा। मैं सोचता था कि मैं अपने माँ-बाप और पत्नी-बच्चे से बहुत प्यार करता हूँ लेकिन वह सच्चा प्यार नहीं था। इस दुख की दुनिया में सच्चा सुख भौतिक पदार्थों से नहीं मिल सकता। सच्चा सुख तो आध्यात्मिक ज्ञान से ही मिल सकता है जो इस समय धर्मग्लानि, कलियुग के अंत और सतयुग के आरंभ काल 'संगम' पर स्वयं निराकार, ज्ञान के सागर परमपिता परमात्मा शिव, ब्रह्मा बाबा के साकार तन में दिव्य अवतरण लेकर दे रहे हैं और इस पुरानी दुनिया को नया बना रहे हैं, पतित से पावन बना रहे हैं। इस ज्ञान और सहज राजयोग से ही सुख, शान्ति से भरपूर मरजीवा जन्म मिला। मैं जेल में रहते भी जेल से आज़ाद महसूस करता हूँ क्योंकि मालूम हो गया है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार

की जेल ही सबसे बड़ी जेल है। इस जेल में दुनिया का हर कैदी दुखी और अशान्त है। मैंने इस विकारों की जेल से आज़ाद होने के लिए अपना वकील शिवबाबा को बनाया है। यह बेहद का वकील ही मुझे दोनों प्रकार की जेलों से निकालेगा। यह मेरा पूरा विश्वास है। बाबा तो करन-करावनहार हैं, वे सिर्फ अच्छा काम ही कराते हैं, बुरा काम तो माया कराती है।

जेल में कुछ कैदी भाई समझते हैं, डराना, धमकाना, गाली देकर बातें करना – इन सबसे अपनी पहचान बन सकती है। लेकिन पूरी जेल में, जेलर से लेकर सभी अधिकारी और कैदी भाइयों तक मेरी सकारात्मक पहचान है। मुझसे सभी बहुत ही नम्रता और प्यार से बातें करते हैं क्योंकि मैं सभी से धीरे से बोलता हूँ और मीठा बोलता हूँ। दोनों प्रकार की पहचानों में कितना अंतर है! अब मुझे सारी जेल ही परिवार की तरह लगती है। मैं चाहता हूँ कि सभी भाइयों को अपने परमपिता का परिचय दूँ, इसी सेवा में मैं लगा रहता हूँ। बहुत मज़ा आता है सेवा के बदले मेवा खाने में। बाबा मुझे बहुत अच्छी पालना दे रहे हैं। बाबा के साथ का अनुभव बताने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। कमाल है बाबा की जो मुझ पत्थरबुद्धि को पारसबुद्धि बना दिया। सात्विक भोजन खिलाकर जीने के लिए खाना सिखा दिया। अब किसी से लेना नहीं है, बाबा ने देना सिखा दिया। ❖

# पारसमणि

• ब्रह्माकुमार देवदत्त लगवाल, भावनगर

पारसमणि एक ऐसे स्थूल पत्थर या ठोस वस्तु की कल्पना है जो लोहे को स्पर्श करके सोना बना देने की क्षमता रखती है।

एक दंतकथा के अनुसार पारसमणि किसी उच्च कोटि के तपस्वी के हाथ आ गई। वह तपस्वी घुमक्कड़ वृत्ति के थे। जहाँ जाते, पारसमणि को गड्ढे में दबा देते और स्थान बदलते समय फिर अपने साथ ले जाते। उन्होंने कभी भी किसी काम के लिए उसका उपयोग नहीं किया। अपने अंतिम दिनों में एक विश्वासपात्र शिष्य को वह पारसमणि दी, उसका महत्त्व भी समझाया लेकिन उस शिष्य ने भी कभी उसका उपयोग नहीं किया। अंतिम समय में वह भी पारसमणि को अपने श्रेष्ठतम शिष्य को देने लगा और उसका महत्त्व बताते हुए कहने लगा, हम संन्यासी लोगों के लिए यह वस्तु निकम्मी ही है लेकिन आप इसे संभालकर रखना। कभी विकट समय आ जाये तो इससे लोहे को स्पर्श करके स्वर्ण बनाकर बेचने से मनचाही धनराशि मिल जायेगी। मुझे मेरे गुरु ने और मेरे गुरु को भी उसके पूर्व गुरु ने यह दुर्लभ वस्तु दी थी लेकिन हमने इसका उपयोग नहीं

किया। मैंने जैसे अपने गुरु से ली थी वैसे ही तुझे सौंपकर गुरु के ऋण से उऋण हो रहा हूँ, तू यह देवदुर्लभ पारसमणि अपने पास रख।

शिष्य ने गुरु को कुछ क्षण रुकने का अनुरोध किया जिसे गुरु जी ने मान लिया। शिष्य ने उस लकड़ी के डिब्बे को गुरु के सामने ही खोला जिसमें घास-पूस में लिपटी पारसमणि थी। फिर उसे लोहे के बक्से में डाला और पारसमणि के स्पर्श से वह लोहे का डिब्बा शुद्ध सोना बन गया। अब पारसमणि और सोने का वह छोटा संदूक दोनों ही चमकर रहे थे।

शिष्य सोचने लगा कि बहुत-सा स्वर्ण बनाकर बेचने से बहुत-से पैसे मिल सकते हैं जिससे बड़े आश्रम तथा सदाव्रत की व्यवस्था होगी, बड़े अच्छे अस्पताल में गरीबों की निःशुल्क सेवा भी हो सकती है जिससे अपनी प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। वह एक प्रकार से सम्मोहन की-सी स्थिति में पहुँच गया था लेकिन दूसरे ही क्षण उसने अपने संन्यासी जीवन की भावना को सचेत किया, कहीं सुनी हुई बातें मानो उसे उन्हीं सुवर्ण अक्षरों में लिखी हुई अदृश्य रूप से

दिखने लगी –

कंचन और कामिनी,

दो तीखी तलवार,

उठे जो राम-भजन को,

लें बीच में मार।

शिष्य ने बिना विलंब किये पारसमणि और सुवर्ण के बक्से को नदी के तेज बहाव में बहा दिया और मुड़कर गुरु को प्रणाम करते हुए बोला, गुरुदेव, हमारे पूर्व गुरुओं का जीवन पारसमणि के उपयोग के बिना भी बीत ही गया। आपने भी अपना जीवन सुवर्ण-संपदा के मोह के बिना ही बिता दिया तो अब मैं यह बोझ उठाकर कब और कहाँ तक घूमता रहूँ? अपने काम की जो वस्तु नहीं है, वह चाहे कितनी भी मूल्यवान क्यों न हो, अपने लिए वर्ज्य ही है, यही समझकर मैंने पारसमणि का त्याग किया है।

गुरु ने शिष्य की पीठ थपथपाते हुए कहा, मैंने अपने गुरु से और मेरे गुरु जी ने अपने गुरु से यह व्यर्थ वस्तु लेकर रख छोड़ी थी। आज तूने इसको मेरे सामने ही फेंक कर सच्चे संन्यासी का आदर्श प्रस्तुत किया। मैं साधु होकर भी पारसमणि के आकर्षण में फँसा रहा। वत्स, तेरा कल्याण हो, आज से तू अपना मार्ग स्वयं ही प्रशस्त कर। मैं अपने अंतिम दिनों में ही सही, त्याग का रहस्य समझ तो सका। फिर आशीर्वाद देते



हुए गुरु ने अलग दिशा में और शिष्य ने अलग दिशा में कदम बढ़ाए।

इस बोध कथा का संदेश यही है कि कई बार सर्वस्व त्याग के मार्ग पर चलने वाले साधकों को भी स्वर्ण का आकर्षण हो जाता है और इस आकर्षण के पीछे तर्क यह दिया जाता है कि इससे हम विश्व

कल्याण का कार्य करेंगे। परंतु यह बिल्कुल सत्य बात है कि त्याग और तप की अग्नि से पवित्र हुए बिना जो सहज धन प्राप्त हो जाता है वो मानव की वर्षों की साधना को हिलाने, डिगाने और समाप्त करने के निमित्त बन जाता है। इसलिए ऐसे सहज धन के आकर्षण से दूर रहने

में ही भलाई है। हमारे त्याग-तप, मेहनत और परोपकार की छत्रछाया में जो धन सेवक बनकर आता है वह सुख देता भी है और उस छाया को नुकसान भी नहीं पहुँचाता। इसलिए भगवान कहते हैं, साधना का बल बढ़ाओ, साधन स्वतः आयेंगे और साधना को आंच भी नहीं आ सकेगी। ❖

## बाबा ने ली सुध

पिछले एक साल से मेरे घर पर नित्य मुरली क्लास होती है जिसे देख और सुनकर मैं स्वयं को गर्वित एवं हर्षित महसूस करता हूँ। ऐसा होने से पहले मैं और मेरा घर क्या था? मैं नित्य मदिरापान करने वाला – सुबह, दोपहर, शाम, रात न जाने कितनी बार मदिरा पान करता था। मदिरा के सिवाय मेरी ज़िन्दगी में कुछ भी नहीं था। बच्चे, युगल (पत्नी) सब मुझसे परेशान रहते थे। आये दिन कलह-क्लेश और दुख से भरा वातावरण बना रहता था। मेरे बच्चे एक-एक कर मुझे छोड़ बाहर काम पर चले गये। मुझसे कोई भी प्यार अथवा सहानुभूति नहीं रखता था फिर भी मैं ज़िन्दगी को बर्बाद करने में लगा रहा। कहीं से पैसे मिलें, किसी भी कीमत पर पैसे मिलें, सारे मदिरा में चले जाते थे। धीरे-धीरे स्वास्थ्य काफी गिरने लगा। फिर भी मेरा मन किसी भी बात को नहीं समझ पा रहा था। रिश्तेदारों ने, अभिभावकों ने मुझे काफी समझाया पर कोई असर नहीं हुआ।

मेरे घर के बगल में एक विद्यालय और एक शिवजी का मंदिर है जहाँ प्रत्येक वर्ष दुर्गापूजा का आयोजन

होता है। वहीं हमने ब्रह्माकुमारी बहनों को चैतन्य दुर्गा जी की झांकी एवं प्रदर्शनी करते देखा। शिव के मंदिर में क्लास शुरू हुई, कुछ दिनों तक मुरली चली। उसके बाद मंदिर के नवनिर्माण का कार्य होने लगा। मुरली चलाने के लिए भाइयों एवं बहनों को दिक्कत होने लगी। मेरे भतीजे ने मेरी युगल से कहा कि मकान तो आपका खाली पड़ा है, सो बाबा की मुरली क्लास आपके घर में शुरू कर देते हैं। युगल ने हाँ भर दी। मुझे तो कोई मतलब था नहीं क्योंकि मेरा सारा दिन घर के बाहर ही बीतता था।

मुरली क्लास शुरू होने के तीन-चार महीने बाद मुझे कुछ भान होने लगा कि यह क्या हो रहा है। मैं भी मुरली क्लास में बैठने लगा। जो बहनें मुरली सुनाने आतीं, उनकी सौम्यता और सहानुभूति ने मेरी ज़िन्दगी बदल दी। धीरे-धीरे मुझे समझ आने लगी कि मैं यह क्या कर रहा हूँ। सर्व के सहयोग, सहानुभूति, प्यार से मैंने मदिरा का पूरी तरह त्याग कर दिया। आज मैं पूरी तरह नशामुक्त जीवन पाकर गर्वित एवं हर्षित हूँ। मेरे जैसे घोर अज्ञानी, पापी को बाबा ने कितना बदल दिया और मेरे अपवित्र घर को पवित्रता एवं खुशियों से भर दिया। धन्य बाबा आप जो आपने मेरी सुध ली।

ब्रह्माकुमार मातादीन, रानीगंज

## अथाह ज्ञान-भण्डार थे भ्राता जगदीश जी

ब्रह्माकुमारी प्रभा बहन, पीतमपुरा सेवाकेन्द्र (शक्तिनगर, दिल्ली) की निमित्त संचालिका हैं। आपने भ्राता जगदीश चन्द्र जी के साथ 18 सालों तक शक्तिनगर सेवाकेन्द्र में रहकर ईश्वरीय सेवाएँ की और बहुत कुछ सीखने का सुअवसर प्राप्त किया। प्रस्तुत कर रही हैं आप भ्राता जी के महान प्रेरणादायी जीवन के संस्मरण।



### बहनों को आगे रखते थे

आदरणीय भ्राता जगदीश जी सबको निश्चिन्त रखते थे। पग-पग पर मार्गदर्शन करते थे। सब कार्य स्वयं करते थे और नाम हमेशा बहनों का करते थे। हर बात हमें सिखाते और खुद पीछे हो जाते थे। चाहे कोई वी.आई.पी. सेवाकेन्द्र पर आये, चाहे बाबा के नये सेवाकेन्द्र का उद्घाटन हो, सदा ही खुद पीछे रहते थे, मंच पर भी नहीं आते थे। हाथ जोड़कर पीछे ही बैठ जाते थे और कहते थे, बाबा ने अपना काम करवा दिया है, हमारा भाग्य बना दिया है, शुक्रिया बाबा।

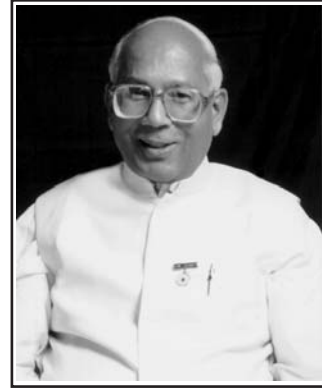
### समय के पाबंद

भाई साहब की दिनचर्या साढ़े तीन बजे से पहले ही शुरू हो जाती थी। कैसी भी परिस्थिति हो, तबीयत कैसी भी हो लेकिन समय के पाबंद खुद भी रहते और हमें भी रहना सिखाते थे। मीटिंग चाहे दिल्ली में

हो, चाहे मधुबन (पाण्डव भवन) में, चाहे चंडीगढ़ में, समय पर पहुँचते थे। सभा की सारी व्यवस्था, सभा शुरू होने से एक घंटा पहले ही संपन्न कराते थे। समय से पहले काम पूरा कर लेना चाहिये – ऐसी भाई साहब की धारणा थी।

### यज्ञ का एक कण भी हीरे-तुल्य है

सेन्टर पर चाहे कोई एक दर्जन केले भी लेकर आये तो भाई साहब उन्हें सेवा में ही लगाते थे। कहते थे, बाबा के भण्डारे में कोई भी चीज़ आई, पहले उसका भोग लगाओ। उतना ही भोजन थाली में लो जितना खाया जाये, व्यर्थ कोई नहीं करे। भोजन करने से पहले खुद भी शिवबाबा का ध्यान करते, हाथ भी जोड़ देते थे और भोजन करने के बाद कई बार कहते थे कि थाली धोकर पीना चाहिये। ब्रह्मा भोजन दुखभंजन भोजन है, इतना महत्त्व



हमें बताते थे। एक चावल का दाना भी उनकी थाली में बचा हुआ नहीं होता था और भोजन के समय साइलेन्स का महत्त्व बताते थे। कहते थे, याद में स्वीकार किया गया भोजन अन्तरात्मा को तृप्त करता है, फिर कोई इच्छा ही नहीं रहती, वो संतुष्ट रहती है, भोग लगे हुए भोजन के लिए तो देवतायें भी तरसते हैं।

### मुरली से जिगरी स्नेह

मुरली में जो कहावतें आती थीं जैसे 'भैंस के आगे बीन बजाना', 'मिरूआ मौत मलूका शिकार' या

कोई दृष्टांत जैसे कि सागर से देवता निकले और उन्होंने थाली भर-भर कर रत्न दिये – इन सबका अर्थ, इनके पीछे बाबा का भाव – ये सब बताकर घंटा भर मुरली अच्छी तरह से रिवाइज़ करवाते थे। जब खुद भी अमृतवेले मुरली सुनते थे तो बड़ी एकाग्रता से और डायरी पेन हाथ में पकड़कर सुनते थे। बाबा ने आज कौन-सी विशेष बात कही है, उसे अंडरलाइन करते थे। भाई साहब हम सबको भाषण करना भी सिखलाते थे। हर सप्ताह एक टॉपिक दे देते थे, क्लासरूम में माइक चालू करवा देते थे, चाहे वहाँ केवल सात-आठ ही भाई-बहनें बैठे होते थे परंतु हम सभी बहनों की प्रैक्टिस करवाते थे। फिर खुद हमें बताते थे कि दस में से कितने नंबर का भाषण आपने किया है।

### हड्डी मेहनत

हरेक कार्य खुद करके हमें सिखाया। सुबह साढ़े तीन बजे संगठित योग के लिए पहले खुद हॉल में जाकर लाल बत्ती कर देते थे। उसके बाद कई बार वे पहली मंजिल की घंटी भी बजाते थे ताकि हम जल्दी उठकर आ जायें। स्वयं हड्डी मेहनत करते थे और हड्डी मेहनत करवाते भी थे। किताब के लिए मैटर लिखवाते समय वे लगातार बोलते रहते थे, पेन का रिफिल भी

खत्म हो जाता था, कंधों में दर्द शुरू हो जाता था लेकिन उनकी वाणी से रत्न निकलते ही जाते थे।

### योग-भट्टी

हफ्ते में एक बार सेवाकेन्द्र पर रहने वालों को बाबा के कमरे में बैठकर योगभट्टी करनी होती थी। मेरा सोमवार का दिन निश्चित था। सुबह की मुरली और नाश्ते के बाद 9 बजे बाबा के कमरे में बैठती थी, दीदी और भाईसाहब भी बैठते थे। एक बजे खाने की बेल बजती थी और मैं शान्ति से डायनिंग हॉल में सबके साथ भोजन करके फिर वापस बाबा के कमरे में आती थी। वातावरण शक्तिशाली और अव्यक्ति महसूस होता था। आत्मा सिर्फ बाबा से ही लेन-देन कर रही होती थी। दोपहर 2 बजे भाई साहब दुबारा आते और दृष्टि देकर योग कराते। तीन बजे भाई साहब जाते और चक्रधारी दीदी आकर योग कराते थे। वे चार बजे जाते और चाय टोली के बाद यह मौन योग-भट्टी साढ़े पांच बजे पूरी होती थी। वही अभ्यास जो भाई साहब ने हम सब बहनों-भाइयों को डाला, आज बहुत मदद कर रहा है।

### सेवा में तीव्र गति

सन् 1989 में मुजप्फरनगर सेवाकेन्द्र की ज़मीन ली गई। उस

समय भाई साहब से शक्तिनगर में फोन पर बात करने के लिए हम बहनों को टेलिफोन एक्सचेंज तक पैदल जाना पड़ता था। मकान के नक्शे वे बस ड्राइवर के हाथ भेजते थे और हमें कह देते थे कि दिल्ली बस अड्डे से इस नंबर की बस, इतने बजे गई है, आपके पास इतने घंटे में पहुँचेगी, आप मुजप्फरनगर बस अड्डे से उन नक्शों को ले लेना, फिर ठेकेदार से काम शुरू करवा देना। भवन बन गया पर फर्श में मार्बल लगना बाकी था तभी दादी गुलजार से उद्घाटन की तारीख भी निश्चित कर दी। मैंने कहा, अभी तो एक भी बल्ब या ट्यूबलाइट नहीं लगी है, तो अगले दिन एक गाड़ी में बिजली की तारें और दो भाई लेकर खुद ही सुबह 6 बजे मुजप्फरनगर पहुँच गये। सात बजे से भाई साहब आंगन में खड़े हो गये, सबको सेवायें बताईं और सब जगह बिजली की फीटिंग शुरू हो गई। बिजली का मीटर भी फटाफट लगा। दोपहर के दो बज गये, कोई आराम नहीं, भोजन भी नहीं। जब मैंने भोजन और आराम के लिए कहा तो बोले, मैं खड़ा रहूँगा तो सब कार्य तेज़ी से करेंगे, मुझे आज ही पूरा कराकर जाना है, कल यहाँ उद्घाटन होना है। रूड़की, सहारनपुर, हरिद्वार, मेरठ,

मोदीनगर से सब बहन-भाई यहाँ आयेंगे, बड़ा भोग बनना है, किचन आज ही शुरू करो। इतना तीव्रता से कार्य कराते थे। उनके शरीर छोड़ने के बाद जो संदेश आया उसमें भी बाबा ने यही कहा कि इस बच्चे की विशेषता थी, जहाँ खड़ा हो जाता था, सब तेज़ी से कार्य करते थे। अब एडवांस पार्टी का कार्य भी तीव्रता से होगा।

### अथाह ज्ञान

भाई साहब में अथाह ज्ञान था। जब क्लास में टॉपिक चला कि पुरुषार्थ बड़ा या भाग्य, तो दोनों तरफ के ग्रुप लीडर को समझा देते थे। एक को कहा, पुरुषार्थ बड़ा है और दूसरे को स्पष्ट कर दिया कि भाग्य बड़ा है, इस भाग्य के कारण ही तो हम बाबा के पास आये हैं। उनके कमरे में बैठकर ऑफिस का कार्य करते हुए उनकी इस कला को रोज़ देखती थी। किसी भी क्षेत्र का पढ़ा-लिखा व्यक्ति आ जाये, चाहे चिकित्सा क्षेत्र का, चाहे वकालत के क्षेत्र का – उनके समझाने का तरीका बड़ा ही विधिपूर्वक होता था। उन्हें जो 'गणेश' और 'संजय' का टाइटल बाबा ने दिया, वह मैंने प्रैक्टिकल में देखा है कि कैसे ज्ञान-नयनहीन को रास्ता दिखाते थे। ऐसे लगता था, हर विषय का उन्होंने

अति गहराई से अध्ययन किया है। जब भाई साहब शक्तिनगर में होते थे तो रात्रि क्लास कराते थे। ज्ञान की कितनी गुह्य बातें सरल करके, मिसाल देकर, मम्मा बाबा के उदाहरण देकर, दादियों की जीवन-कहानी सुनाकर हमें समझाते थे, इसलिए हम कभी भी उनकी रात्रि क्लास मिस नहीं करते थे।

### गंभीरता में रमणीकता

भाई साहब गंभीर भी थे, साथ ही रमणीक भी थे। उनकी रमणीकता में अलौकिकता होती थी। रविवार की क्लास में सभी बच्चे आते थे। बच्चों को भाई साहब ने एक बार पेन दिया और कहा, यह शिवबाबा का पेन है, आपको हर पेपर में पास करा देगा। आज वे बच्चे अपने-अपने क्षेत्र में विशेष पदों पर पहुँच गये हैं परंतु भाई साहब से मिला हुआ पेन का वरदान उन्हें अभी तक याद है।

### समस्याओं का समाधान

भाई साहब हमें समझाते थे कि हमारी आंतरिक स्थिति नष्टोमोहा हो और हममें व्यवहार कुशलता भी हो। कोई बीमार है तो उनके पास भेजते थे, कहते थे, फल-फूल लेकर जाओ, उसे बाबा की मुरली सुनाकर आओ। हम सबकी तबीयत का बहुत ध्यान रखते थे, दवाई भी मंगवाते थे। सेन्टर पर भाई-बहनों

का आना-जाना चलता ही रहता था। कहते थे, यह हमारा दैवी परिवार है, कोई आता है तो उसका सत्कार करो, उसके साथ दिव्यता का व्यवहार करो। वे खुद भी ऐसा व्यवहार करते थे और हमें भी सिखाते थे। कहते थे, यह ईश्वरीय परिवार कल्प में एक ही बार मिलता है। ईश्वरीय परिवार में आपस में बहुत स्नेह और रिगार्ड होना चाहिए। नये भाई-बहनों की समस्याओं का भी समाधान करते थे। आज भी माताओं को वे दिन याद आते हैं जब भाई साहब उन्हें बंधनमुक्त बनने और मधुबन जाने की युक्तियाँ सिखाते थे। उनसे सीखे हुए ये भाई-बहनें आज तीव्र पुरुषार्थी बन, औरों को आगे बढ़ाने तथा सेन्टर खोलने के निमित्त बने हैं। बाबा कहते, यह ज्ञान अविनाशी बाप दे रहा है, फल अवश्य देगा चाहे देरी से दे लेकिन देगा जरूर। भाई साहब कहते थे कि सेन्टर का वातावरण हमेशा दिव्यता का होना चाहिये, मनमुटाव का नहीं। रोज़ हमें याद दिलाते थे कि आज आप इस सेन्टर पर हो, कल और किसी सेन्टर पर होवोगे, पता नहीं, आपस में मिल भी पाओगे या नहीं। बाबा नये-नये सेन्टर खुलवाता जा रहा है। यही सुअवसर है संगठन में रहने का इसलिए प्यार से, मिलजुलकर रहो। (क्रमशः)

# एक माँ के दर्द में प्रभु का साथ

• ब्रह्माकुमारी मंजूश्री, कोलकाता

**आ** काश में सूर्य चमक रहा था परंतु इस भरी दोपहरी में मेरे आंगन में घोर अंधकार था। मैं खुद को भी देख नहीं पा रही थी। आकाश और धरती के बीच हवा बहुत तीव्र गति से बह रही थी, मैं इस हवा में हाथ-पैर मारती रह गई, मैं जीवित तो थी परंतु सांसें न जाने कहाँ चली गई थी!

## ज्ञान से नया जीवन मिला

ऐसे अंधकारमय समय में मुझे मिला भगवान और मेरा भाग्य। घोर कलियुगी अंधकार से निकलकर मैं संगमयुग के प्रकाश में आ पहुँची। आत्मा-परमात्मा का ज्ञान पाकर मुझे नया जीवन प्राप्त हुआ। बाबा (परमात्मा) को पाकर मैं परम सुखदायी सौभाग्यशाली आत्मा बन गई। कहा जाता है, 'सच्चा दोस्त वह है जो दुख में और सुख में, हर समय पर साथी है।' जब मैं दुख की चरम सीमा पर पहुँची, तब बाबा ने सच्चा दोस्त, शिक्षक और पथ प्रदर्शक बनकर मुझे आत्मा को साथ दिया।

## एक झोंके ने चिराग बुझा दिया

मैं लौकिक जीवन में कालेज में लैक्चरर हूँ। मेरा बेटा राजकुमार (राज) इंजीनियर था। मेरे पति तपन व्यापार करते हैं। यही मेरा छोटा-सा सुखमय परिवार था। राजकुमार 12

अगस्त 2009, दोपहर 12 बजे तक बिल्कुल ठीक-ठाक था, हम लोग बैठकर बातें कर रहे थे कि अचानक 12.15 पर उसके सिर में दर्द हुआ, वह सोफे पर सो गया और 12.20 पर ही उसने दम तोड़ दिया। हमेशा के लिए हमारी दुनिया से विदाई ले गया। अनेक विशेषज्ञ डॉक्टरों ने आकर उसे देखा लेकिन कोई भी उस अकाले मृत्यु का कारण बता नहीं सका। 'सेरिब्रल अटैक (Cerebral attack) हो गया' कहकर सभी चुप रह गये। यह सब अचानक हो गया। समय के झोंके ने एक माँ के चिराग को सदा के लिए बुझा दिया और माँ गहन अंधकार में डूबकर रह गई।

## बुढ़ापे की लाठी टूट गई

पुत्र-शोक में डूबकर मैं और मेरे पति दोनों निराश हो गये। पति तो जैसे पागल ही हो गये। हम दोनों निराश मन लेकर एक-दूसरे की तरफ देखते और मन ही मन यही कहते, 'मेरा लाल खो गया, पता ही नहीं, कहाँ चला गया, अब वह कभी नहीं आयेगा।' ऐसे सोचते-सोचते हम दोनों के बीच रात और दिन एक होने लगे। जीवित रहने की इच्छा खत्म हो गई। हम अकेले हो गये।



बुढ़ापे के द्वार पर पहुँचने के समय हमारी लाठी टूट गई, हम बेसहारा हो गये। और कितना दूर चलना है, क्या पता? कैसे चलेंगे?

## समझ की रश्मियाँ

### उदय होने लगी

हमारे टूटे हुए दिल को सांत्वना देने के लिए पाँचवें दिन मेरी मौसी आई। वे सन् 2000 से ही प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ी हैं। उन्होंने पूछा, 'तुम क्यों रो रहे हो? किसके लिए रो रहे हो? क्या राज के देह रूपी वस्त्र के लिए रो रहे हो? अमर आत्मा तो अभी भी यहीं है। आत्मा अविनाशी है, देह रूपी वस्त्र विनाशी है।' इन बातों को सुनकर ऐसा लगने लगा कि ये सब सुना तो पहले भी है परंतु आत्मा क्या है, कहाँ है, यह सोचा नहीं। उस दिन के बाद मुझे जैसे ज्ञान का तीसरा नेत्र मिल गया। मैं अनुभव करने लगी, 'मैं आत्मा अविनाशी हूँ, अति सूक्ष्म ज्योतिबिन्दु हूँ, राज की

आत्मा भी सूक्ष्म ज्योतिबिन्दु है।' इसी तरह थोड़ी-सी ज्ञान की बातें सुनकर मन में थोड़ी-थोड़ी समझ की रश्मियाँ उदय होने लगी।

### कीमती बीस साल खो दिये

आठवें दिन ही मैंने आश्रम में जाकर सात दिन का कोर्स शुरू कर दिया। मैं प्रतिदिन नौकरी के कारण आश्रम के बगल से गुजरती थी, आश्रम का नाम भी सुनती थी लेकिन कभी अंदर नहीं गई। बाबा मिलने के बाद मुझे महसूस हो रहा है कि वे जीवन के कीमती 20 साल मैंने खो दिये। बहुत कुछ खोकर मैंने बाबा को पाया है। इतना बड़ा दुख का पहाड़ उठाकर इस दुनिया में चलने की शक्ति सिर्फ परमपिता परमात्मा ने ही मुझे दी है।

### अवर्णनीय प्यार मिल

#### रहा है बाबा से

इसके बाद मैं अपने पति को भी, घर के नज़दीक वाले रायबगान राजयोग प्रशिक्षण केन्द्र में सात दिन का कोर्स कराने ले गई। पति के साथ दुबारा सात दिन का कोर्स करने से मुझे ज्ञान और अधिक स्पष्ट होने लगा। आत्मा के सत्य स्वरूप का अनुभव करने की विधि मिली। मन के विचारों पर ध्यान रखकर, अपने को आत्मा समझने का अभ्यास करते हुए वाणी और कर्म में आने लगी। दिन-प्रतिदिन आत्मा के सत्य

स्वरूप को, सुख, शान्ति, शक्ति आदि को महसूस करने लगी। अपने में धीरज लाकर अपने पति को भी संभालने लगी। घर में आकर उनके साथ ज्ञान के हर बिन्दु पर चर्चा कर उन्हें भी अभ्यास करने के लिए समझाने लगी। धीरे-धीरे मन की अवस्था सुधरने लगी। दुख सहन करने की हिम्मत आने लगी। इस परिवर्तन का श्रेय ब्रह्माकुमारी बहनों को ही जाता है। उनकी प्रेरणा भरी कोशिश ने कुछ ही दिनों में हमारे अंदर ज्ञान और योग के लिए एक आकर्षण बना दिया। हम दोनों प्रतिदिन सवेरे मुरली सुनने जाते हैं। बाबा विशेष रूप से जैसे हम दोनों को पालना दे रहे हैं। उनके हाथ और साथ का अनुभव हर पल हो रहा है। बाबा से इतना स्नेह, इतना प्यार हमें मिलता है जिसका मुख से वर्णन नहीं कर सकते हैं। बाबा की याद, बाबा की पढ़ाई ज़िन्दगी बनकर अंतरात्मा में शीतलता का लेप लगाती है, उम्मीद की किरण बनकर जीने की राह दिखाती है।

### साक्षात् देवियाँ हैं ये बहनें

आज जो ताकत महसूस करती हूँ, यह सिर्फ ब्रह्माकुमारी बहनों के द्वारा ही संभव हो सकी। हमारे जैसी जिन्दा लाशों को अर्थपूर्ण जीवन जीने की कला सिखाने के साथ-साथ हर पल आगे बढ़ने के लिए उमंग-उत्साह भरी प्रेरणाएँ देती हैं ये

बहनें। ऐसा प्रतीत होता है कि परमात्मा के अदृश्य रूप का प्रत्यक्ष अनुभव करने के लिए स्वयं उन्होंने ही इन शिवशक्तियों की रचना की है। इन निमित्त आत्माओं के कारण ही हमारे अंदर विश्वास जागृत होता है कि जिसकी रचना इतनी प्यारी, मीठी, शक्तिसंपन्न कि दुखियों के जीवन में अनहद आनन्द और खुशी की लहरें पैदा कर सकती तो स्वयं सर्वशक्तिवान, विश्वनियंता, रचयिता, कितना न प्यारा और मीठा होगा! निमित्त बहनों का निःस्वार्थ और निष्कपट प्यार ही हमें ज्ञान और योग की तरफ आकर्षित करता है। मेरे जैसी कई आत्मायें होंगी जो असहनीय दुखों के जंगल में फँसकर अशक्त और निराश हो गई होंगी, ऐसी असहाय आत्माओं के लिए आशाओं के दीपक जगाकर बैठी हैं ये बहनें। निराकार बाप के कार्य को साकार रूप दे रही हैं। कलियुग में साक्षात् देवियाँ बनकर हमें सुख की राह दिखा रही हैं।

### बीती को बिन्दु लगाने की समर्थी मिली

मुझे एक दिव्य अलौकिक जीवन मिल गया है। अलौकिक बेहद का परिवार मिल गया है। इतने भाई-बहनों ने मुझे अपनाया, इतना प्यार मिला बहनों से, अपनेपन की महसूसता हुई। बाबा ने मुझे गले लगा



लिया है। जन्म-जन्म की प्यास जो अंदर में थी, इस अनोखे प्यार को पाकर तृप्त हो गई है। मन शीतल हो गया है। बहनों से, परिवार से, ज्ञान-योग के अभ्यास से और बाबा से यह अलौकिक खुशी मिली है। जब भी मेरा मन अतीत की बातों में चला जाता है, तब मैं मुरली के आधार पर वर्तमान और भविष्य पर विचार करती हूँ। अपने को बिन्दु आत्मा समझकर परमात्मा पिता को बिन्दु रूप में याद करती हूँ। तभी मेरा मन शक्तिशाली हो जाता है। फिर मैं ज़िन्दगी के इस कड़े हिसाब-किताब को कल्याणकारी ड्रामा का कोई राज़ मानकर तीसरा बिन्दु लगाने में समर्थ होती हूँ। जो भी दृश्य दिखाई दे रहा है, उसे ड्रामा की भावी समझकर मन को मज़बूत रखती हूँ।

राज की शून्यता जब ज़िन्दगी को घेर लेती है, तब बाबा की याद और मुरली में अपने को व्यस्त रखती हूँ। पहले पूजा-पाठ करती थी, बहुत प्रवचन भी सुनती थी, वह सिर्फ सुनने तक ही सीमित था, कभी धारण करने की बात मन में आती ही नहीं थी। अब जो सत्संग मैं कर रही हूँ, इसमें सुनने के साथ-साथ समझ भी मिली है, बाबा की याद से उसे धारण करने की शक्ति भी मिल रही है।

### स्वाभाविक हो गया है बेहद का वैराग

अब मुझे बाबा से प्यार हो गया है। इतना प्यार कि लगता है वही मेरा संसार है। उसके बिना मेरा अस्तित्व ही नहीं, मेरी कोई पहचान ही नहीं है। जैसे-जैसे उनके संग के रंग की गहराई बढ़ती जा रही है, लौकिक संसार का रंग उतना ही फीका होता जा रहा है। आठ-नौ महीने पहले दुखों में डुबी हुई एक आत्मा श्मशानी वैराग्य लेकर यहाँ आई थी। अब लगता है, बाबा के अखुट प्यार से लौकिक संसार से रग टूटती जा रही है और बेहद का वैराग्य स्वाभाविक होता जा रहा है।

अब दिल यह कहता है, 'जो पाना था सो पा लिया'। इस जन्म का मेरा कीमती लाल खो गया लेकिन जन्म-

जन्मांतर का अविनाशी लाल मुझे संगमयुग पर मिला हुआ है, अब उसका हाथ और साथ कभी न छूटे। ❖

### संपूर्णता देती है आत्म-संतोष

एक मूर्तिकार मूर्ति बनाने में व्यस्त था। एक जर्मन वहाँ से गुज़र रहा था। उसने देखा, जैसी मूर्ति बन रही थी, वैसी ही संपूर्ण रूप से बनी हुई मूर्ति जमीन पर भी पड़ी थी। उसने जिज्ञासा व्यक्त की, क्या आपको एक मंदिर के लिए दो मूर्तियाँ चाहिएँ? मूर्तिकार ने बिना उसकी तरफ देखे उत्तर दिया, नहीं, एक ही चाहिए। फिर एक के होते यह दूसरी क्यों बन रही है, जर्मन ने पुनः जिज्ञासा प्रकट की। पहली मूर्ति की नाक में हलकी-सी दरार है, मूर्तिकार ने काम से ध्यान हटाए बिना जवाब दिया। इसको कहाँ स्थापित करना है? जर्मन ने पुनः पूछा। बीस फुट ऊँचे स्तंभ पर, मूर्तिकार ने बिना उसकी तरफ देखे जवाब दिया। इतनी ऊँचाई पर मूर्ति की नाक की दरार भला किसे दिखाई देगी, जर्मन ने आश्चर्य से पूछा। मूर्तिकार के हाथ रुक गये, वह मुसकराया और बोला, मुझे दिखाई देगी।

सार यही है कि अपनी चीज़ की संपूर्णता या अपने व्यक्तित्व की संपूर्णता स्वयं को संतोष देती है। हमारी चीज़ की कमी को जाने बिना दूसरे ने तो उसे स्वीकार कर लिया पर उस कमी की स्मृति हमें तो बार-बार आयेगी ही। हमारे व्यक्तित्व की कमी-कमज़ोरी को कोई दूसरा यदि देख न पाया तो क्या हुआ, हमें तो दिख ही रही है और हमें पीछे तो खींच ही रही है। अतः कोई भले कहे, ना कहे, टोके ना टोके, खोट कहीं भी हो, कितना भी हो, स्वयं ही मिटा देना चाहिए। ❖

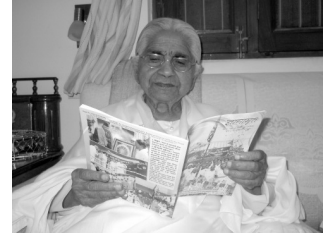
## ज्ञानामृत महोत्सव : ज्ञान दान योजना



ब्रह्माकुमारीज के इस प्लैटिनम जुबली वर्ष में ज्ञानामृत परिवार ज्ञानामृत महोत्सव मना रहा है। सन् 1965 में साकार बाबा के वरद हस्तों से प्रारंभ हुई ज्ञानामृत पत्रिका को जन-जन तक पहुँचाने तथा ईश्वरीय ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लक्ष्य से एक अनूठी योजना 'ज्ञान-दान योजना' बनाई गई है। ज्ञानामृत पत्रिका जिसकी वर्तमान में 2,10,000 प्रतियाँ प्रकाशित होती हैं, इस संख्या को बढ़ाकर 11,00,000 करने का लक्ष्य रखा गया है। अव्यक्त बापदादा, सर्व दादियों तथा वरिष्ठ भाई-बहनों के आशीर्वाद, ज्ञानामृत परिवार के सर्व सदस्यों के अथक प्रयास एवं सर्व ब्रह्मावत्सों की शुभभावना व सहयोग से हम इस लक्ष्य को पूरा करने में अवश्य ही सफल होंगे।

**ज्ञानामृत पत्रिका की विशेषतायें एवं फायदे: (ज्ञानामृत एक, लाभ अनेक)**

1. यज्ञ की पहली हिन्दी मासिक पत्रिका, 2. दादी जानकी जी द्वारा नियमित पठन, 3. जीवन परिवर्तन के प्रेरणादायी अनुभव, 5. भाषण कला तथा लेखन कला के विकास में मददगार, 6. त्योहार एवं विशेष दिनों पर विशेष लेखों का प्रकाशन, 7. ईश्वरीय सेवा समाचार, 8. विशिष्ट एवं आम व्यक्तियों की सेवा



प्यारे शिव बाबा ने 5-3-2011 की साकार मुरली में कहा था, 'बच्चों के लिए मैगजीन निकलती है। यह है ब्रह्माकुमार कुमारियों के लिए जो पढ़कर रिफ्रेश हों। सभी सेन्टर्स वालों से पूछते हैं कि सारी मैगजीन कौन पढ़ते हैं? मैगजीन निकालने वाले को भी आफरीन देनी चाहिए कि आपने बहुत अच्छी मैगजीन लिखी है, आपको धन्यवाद करते हैं।' 'ज्ञान दान योजना' के तहत विभिन्न उपायों से लोगों को ज्ञानामृत पढ़ने तथा सदस्य बनने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा।

**ज्ञानामृत: ज्ञान-दान का महत्त्व**

1. ज्ञानामृत ज्ञान का कलश है। मुख से ज्ञान सुनाने की एक सीमा होती है। अगर हम किसी को मैगजीन देते हैं तो मानो हम उसे ज्ञान-रत्नों की बहुमूल्य सौगात देते हैं जो लंबे समय तक उसके पास रहती है। यह पाठक के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाती है।
2. यह एक ऐसी पत्रिका है जिसमें आम व्यक्ति को उसकी हर समस्या का समाधान, हर दर्द की दवाई मिलती है। जीवन में सच्ची सुख, शांति मिलती है। प्रैक्टिकल अनुभवों की बातें पढ़कर भी प्रेरित होते हैं।
3. हम यह निश्चित करें कि हमारे संपर्क के सभी भाई-बहनों, रिश्तेदारों के घरों में मैगजीन जाती है। अगर नहीं तो उन्हें प्रोत्साहित करें। इस प्रकार घर बैठे ही संबंधियों की सेवा कर सकते हैं।
4. एक बार आप किसी को मैगजीन देंगे तो पढ़ने के बाद वे स्वयं कहेंगे कि आज के जमाने में इतने कम मूल्य में इतनी अच्छी पत्रिका मिलना दुर्लभ है, फिर स्वयं ही सदस्य बनना चाहेंगे।
5. ज्ञानामृत माताओ-बहनों की सच्ची सहेली है। मातायें-बहनें अपने आस-पड़ोस की माताओं, बहनों को इसे पढ़ने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

6. ज्ञानामृत में देश-विदेश के सेवा-समाचार प्रकाशित होते हैं जिससे पढ़ने वाला संस्था की अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों से परिचित होता है और उसके मन पर अच्छी छाप पड़ती है।
7. व्यसनों, बुरी आदतों, संस्कारों के वश आत्माओं की सेवा करने का यह सबसे अच्छा साधन है। मैगजीन देकर अगर हम किसी के जीवन परिवर्तन के निमित्त बनते हैं तो उसकी दुआयें हमें मिलती हैं।

#### संख्या बढ़ाने की विधि :

- 121 करोड़ की जनसंख्या वाले भारत देश में करीब 21 करोड़ परिवार हैं। इनमें से ज्यादा से ज्यादा परिवारों तक इस पत्रिका को पहुंचाया जाए।
- वर्तमान 2,10,000 सदस्यों में से प्रत्येक सदस्य 5 नये सदस्य बनाये।
- पुस्तकालय, बैंक, कंपनीज, धार्मिक संस्थायें, शैक्षणिक संस्थायें, डॉक्टर्स/क्लीनिक को सदस्य बनाना। बस, ट्रेन आदि में सफर करते समय पुरानी मैगजीन साथ लेकर जायें तथा वितरित करें।
- खर्च कर सकने वाले व्यक्तियों द्वारा ज्यादा प्रतिभाँ मंगवाकर अपने मित्र, संबंधियों, मिलने आने वाले व्यक्तियों, कर्मचारियों आदि को निःशुल्क वितरण।
- सार्वजनिक कार्यक्रम, मेले, प्रदर्शनी या अन्य कोई भी ईश्वरीय सेवा करते समय सदस्य बनाना।
- विशेष अवसरों जैसे कि त्योहार, जन्मदिन, पार्टी, फंक्शन आदि पर उपहार रूप में एक वर्ष की सदस्यता की सौगात। फर्म, कारखाने, कंपनी के मालिक त्योहार आदि पर अपने कर्मचारियों को मैगजीन की सदस्यता का उपहार दे सकते हैं।
- टीचर्स बहनें क्लास में आने वाले नये भाई-बहनों तथा कोर्स करने वालों को इस पत्रिका की जानकारी दें तथा सदस्य बनायें।

#### विशेष प्रयास :

- अधिक सदस्यता वाले प्रथम 3 जोन, 12 सेन्टर्स एवं कुल 111 बहनों-भाइयों को दादी जी के हस्तों से अवार्ड दिया जायेगा।
- एक निश्चित संख्या में सदस्य बनाने पर व्यक्ति विशेष को विशेष टाइटल तथा सर्तीफिकेट दिया जायेगा  
50 सदस्य बनाने पर – दानी, 100 सदस्य बनाने पर – महादानी, 200 सदस्य बनाने पर – वरदानी
- अधिकतम आजीवन सदस्य बनाने वाले प्रथम तीन बहन/भाइयों को विशेष इनाम दिया जायेगा।
- हेल्प सेन्टर बनाया गया है जिसका हेल्पलाइन नं. 09414006904 है।
- सरल भुगतान की सुविधा : ऑनलाइन पेमेन्ट, बैंक एकाउंट का विवरण निम्नलिखित है –  
बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इंडिया; बैंक ब्रांच का नाम : शान्तिवन  
सेविंग बैंक एकाउंट नंबर : 30297656367; IFS Code: SBIN0010638

E-mail: hindigyanamrit@gmail.com

(आओ जन-जन में ज्ञानामृत का प्रसार करें, प्रभु प्रेम का यह अलौकिक उपहार दें)